# सुरभित सुधा

सुधा नाहटा

# सुरभित सुधा

लेखिका
**सुधा नाहटा**
बी.एस.सी., एम.ए. (अंग्रेजी)
रतलाम (मध्यप्रदेश)
457001

**छजलाणी पब्लिकेशन**

**Printed at :**

**CHHAJLANI PUBLICATION**

31/1, Ganesh Colony, Near Jain Dadawadi,
Rambag, INDORE (M.P) – 452007
0731 – 2422878, 2422846

---

**First edition : 08.2020**

**© All right Reserved**

खिली कलियां बने फूल

वह यही तो है वह यही तो है.....

# '' माँ ''

*A gift to our* ***mother...***

*Who gifted her whole life to us…*

*Nikhil, Surbhi, Sourabh & Mishika*

# अपनी ओर से

मेरी मम्मी' का जन्म एक साधारण परिवार में सन 1965 में हुआ उनमें शुरू से ही एक गणितज्ञ के गुण रहे है। विविध कलाओं में निपुण एवं सरल स्वभावी होने के साथ साथ प्रबंधन के गुण इनमें रहे है। स्वामी विवेकानंद इनके आदर्श रहे है। कई कठिनाइयों और समस्याओं के बावजूद प्रगति की राह पर चलती रही। इसके पीछे अपने देश की महान संस्कृति और विभूतियों की प्रेरणा रही।

प्रस्तुत पुस्तक सुरभित सुधा में समय–समय पर लिखे गए लेखिका के लेख संकलित है। इसमें हमारी महान संस्कृति व परंपरा को पुष्ट करने वाले लेखों के साथ अपने चारों ओर के परिवेश को प्रतिबंधित करने वाले यथार्थपरक लेख भी है। आज हमारे चारों ओर व्याप्त राजनीतिक उथल–पुथल, संकट और द्वंद्व के बीच अपनी संस्कृति और परंपरा को समझना और उसकी रक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम ऐसा ना कर पाए तो समाज और देश के भविष्य पर खतरे के बादल मंडराते रहेंगे। देश को बचाना निहायत जरूरी है।

आज भौतिकता की तेज हवा में हमारी संस्कृति का दिया बुझ रहा है, वह ना बुझने पाए इस हेतु सभी को सम्मिलित प्रयास करने चाहिए। यही आज के समय की आवश्यकता है, उसकी पुकार है। प्रस्तुत प्रयास भी इसी दिशा की ओर एक कदम है।

# मैं आभार व्यक्त करती हूँ

मेरे दादा साहब आदरणीय निर्भय सिंह जी नाहटा का, मेरे नानी साहब आदरणीय कांता जी सकलेचा का, जिन्होंने मेरी मम्मी को जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आभारी हूँ मेरे पापा सुरेन्द्र जी नाहटा की जो हमेशा उन्हें आगे बढ़ाते रहे। आभारी हूँ आदरणीय डॉ. मुरलीधर चाँदनी वाला जी की उनके अमूल्य आशीर्वचन के लिए। आभारी हूँ सभी स्नेही जन की जिनकी सहायता से इस पुस्तक ने आकार लिया, इसी के साथ मैं आभार व्यक्त करती हूँ ऋतम दीदी का जिनके सहयोग और सहायता से इस पुस्तक का सुंदर रूप में प्रकाशन संभव हो सका।

लेखिका के लेख नईदुनिया में सन 1990 से प्रकाशित होते रहे हैं जिनमें से कई पत्र नईदुनिया से पुरस्कृत हो चुके हैं, इन सभी का संकलन है यह पुस्तक, जिसे आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। अपनी परंपरा और परिवेश को समझने में यदि इससे थोड़ी बहुत सहायता मिल सके, तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूंगी।

**सुरभि नाहटा चोपड़ा**

# आशीर्वचन

## ये विचार-पत्र अत्यंत मूल्यवान हैं

एक जमाना था, जब नईदुनिया में संपादक के नाम लिखे गए पत्र छपते, तो प्रबुद्ध पाठक आँखे फाड़–फाड़ कर पढ़ते थे, और कभी–कभी तो कुछ समूह जन–आंदोलन के लिये उठ खड़े होते थे। नईदुनिया के प्रधान संपादक राजेन्द्र माथुर खुद पत्रों का चयन करते थे। उनके बाद राहुल बारपुते ने भी वही प्रणाली अपनायी। नईदुनिया अखबार को लोक–चर्चित बनाये रखने में संपादक के नाम पत्रों का बड़ा योगदान हुआ करता था। अभय छजलानी आये, तो वे प्रकाशनार्थ आये हुए पत्रों को अपनी मेज पर सबसे पहले मंगवाते थे। उनका विचार था कि ये पत्र जनता की आवाज है, और एक अच्छे अखबार को जनता की बात सबसे पहले उजागर करनी चाहिए।

सुधा नाहटा नब्बे के दशक से ही पत्रलेखन की विधा में बहुत सक्रिय हैं। यह विधा लेखक का बहुत समय लेती है, क्योंकि यदि आप अच्छे पाठक नहीं है, सामाजिक चेतना के प्रति जागरूक नहीं है और प्रामाणिक जानकारी जुटाने में समर्थ नहीं है, तो आप इस विधा में हाथ नहीं डाल सकते। सुधा नाहटा आरंभ से ही प्रगतिशील रही हैं, और जनता की आवाज को कम से कम शब्दों में व्यक्त करने की अनूठी क्षमता के कारण उनके पत्र नईदुनिया में बहुत सम्मान के साथ प्रकाशित होते रहे हैं।

सुधा नाहटा रतलाम शहर के उन रचनाकारों में शुमार हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से सरकार और समाज को आईना दिखाने का काम बहुत सावधानी से किया है। सामाजिक बदलाव यकायक नहीं होता। उसके लिए लगातार प्रयत्न करने होते हैं, अधिकारियों से, व्यापारियों से, संस्थान चलाने वाले पदाधिकारियों से लेकर समाज के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े वर्ग से संवाद स्थापित करना होता है। यह कठिन काम सुधा नाहटा ने पूरी ताकत लगााकर किया।

यह बेहद प्रसन्नता का विशय है कि सुधा नाहटा के वे सभी पत्र जो वर्ष 1990 से लेकर अभी–अभी तक नईदुनिया में छपे है, उनका सुंदर संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। ये सारे पत्र एक तरह से 'विचार पत्र' की श्रेणी में आते हैं। इन पत्रों में वही ऊर्जा है, जो बड़े–बड़े आलेखों में और रिपोर्ताज में होती है। सच पूछा जाये, तो बड़े आलेखों का असर देर से होता है, इन विचार–पत्रों का असर जल्दी होता है, और हमने तो इनके आधार पर तत्काल कार्रवाई होते भी देखी–सुनी है।

इस मौके पर सुधा नाहटा के साथ कनकमल जैन पैलेस जावरा, पुश्पलता शर्मा, फरीद खान, बापूलाल सकलेचा सहित कई पत्रलेखकों का स्मरण होता है, जिन्होंने सक्रिय होकर इसे आंदोलन का रूप दिया।

निःसंदेह सुधा नाहटा बधाई की पात्र हैं। उनकी लेखनी में समय की आग है, और यह आगे भी बनी रहनी चाहिए। मैं उनकी साधना को प्रणाम करता हूँ, और आशा करता हूँ कि वे विचार–पत्र लिखते रहने के सिलसिले को जारी रखेंगी। यह जरूरी है, और इसकी मूल्यवत्ता कभी कम नहीं होगी। विश्वास है, इस विचार–संग्रह का सर्वत्र सम्मान होगा।

**डॉ. मुरलीधर चाँदनीवाला**

मेरी पुत्र बहू सुधा नाहटा शादी होकर आई तब से ऐसा लगता था कि ओजस्वी लेखन कला साथ लेकर आई। सुग्रहणी के साथ–साथ विविध कलाओं में भी रूचि रखती रही। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह इसी प्रकार जीवन में उन्नति करें व सफलता हासिल करें मेरा आशीर्वाद हमेशा उनके साथ है बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

**एन.एस.नाहटा**

**काली–काली बादलों की घटाओं में घिरी सूरज की किरणें कुछ क्षण फिर मुस्कुराती निकलती है। हौसले हो बुलंद मन की हो लगन तो प्रगति उसके कदम चूमती है।**

मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेने वाली मेरी पुत्री सुधा बचपन से ही शांत स्वभाव की रही। अपनी पढ़ाई लिखाई के साथ–साथ विविध कलाओं व साहित्यिक क्षेत्र में रूचि रखती थी। आज तक उसका यह क्रम जारी है। समय–समय पर नईदुनिया में पत्र संपादक के नाम लिखे गए लेख इस पुस्तक 'सुरभित सुधा' में संकलित है। भगवान से यही प्रार्थना करती हूं कि वह अपनी लेखनी बरकरार रखें, बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

**कान्ता सकलेचा**

श्रीमती सुधा जी नाहटा के 'नईदुनिया' में लिखे हुए लेख मैं पिछले 3 वर्षों से पढ़ रहा हूं। इनके 30 वर्षों के संपादक के नाम लिखे गए पत्रों का संकलन होने जा रहा है और मैं आशा करता हूं कि इनके लेख आगे भी ''नईदुनिया'' में प्रकाशित होते रहे। इस पुस्तक के प्रकाशन पर चोपड़ा परिवार की ओर से बहुत–बहुत शुभकामनाएं.....

**अजित कुमार चोपड़ा**

# शुभ भावना

मेरी पत्नी सुधा जब मेरे जीवन में आई, जैसे खुशियों की बहार लाई हो। हमेशा सुख–दुख में मेरा साथ देती रही। गृह कार्य में दक्ष होने के साथ–साथ लेखन कार्य भी जारी रखा। सुरभि और सौरभ दोनों बच्चों से हमारे जीवन को महकाया। मैं यही शुभकामना करता हूं कि सुधा अपने जीवन में आगे भी इसी प्रकार लेखन कार्य व कलाओं में उन्नति करें व सफलता प्राप्त करें।

**सुरेंद्र नाहटा**

*एक मां सबसे जरूरी,*
*बाकी रह जाए चाहे सारी दुनिया अधूरी......!*

यह पत्रकारिता का क्रम पोस्ट कार्ड से शुरू हुआ और अब ईमेल द्वारा होने लगा है। मेरी माँ बहुत ही सुंदर तरीके से अपनी बात व्यक्त करती है। मैं आशा करता हुं कि मेरी माँ यू हीं अपनी लेखनी की सुगंध से मुझे और हम सभी को हमेशा महकाती रहेगी।

**आपका प्यारा बेटा**

**सौरभ**

# नईदुनिया-पत्र संपादक

**01 मध्यम वर्ग और फैशन** **22.08.1990**

सबा अब्बासी का लेख पढ़ा। मध्यमवर्गीय माता–पिता के बेटे और बेटियों को अपनी पारिवारिक स्थिति को मद्देनजर रखते हुए फैशन के पीछे नहीं भागना चाहिए। वर्तमान में हर युवक व युवती को ध्यान रखना चाहिए कि वेशभूशा से अधिक तो उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है।

**02** **06.09.1990**

**"संध्या बायवार का लेख छोटी किंतु महत्वपूर्ण बातें"** पढ़ा। आपने तो केवल छोटी–छोटी वस्तुओं के बारे में ही लिखा था। बहुत से व्यक्ति तो दूसरों का मिक्सर, सिलाई मशीन, प्रेस आदि रोज काम आने वाली आवश्यक चीजें मांग कर काम निकाल लेना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। शायद यह लेख पढ़कर उन्हें कुछ सीख मिले व मांगने की आदत छोड़ दे।

**03 इस घरौंदे में अपनी निजता ना खोने दे** **12.09.1990**

रघुवंशी का लेख पढ़ा। वास्तव में स्त्री के सभी क्रियाकलाप घर शब्द से जुड़े रहते हैं। हमारे भारतीय समाज में बचपन से ही लड़कियों की मानसिकता में यह विचार भर दिया जाता है कि उनका हर क्षण घर के लिए समर्पित हो। परंतु नारी को अपनी प्रकृति में परिवर्तन लाना होगा। उसे अपने होने की सार्थकता सिद्ध करनी होगी। उसे अपनी समग्रता और चेतना को सृजनात्मक स्वरूप प्रदान करना होगा।

**04** **27.10.1990**

8 सितंबर के सखी संसार में ममता दुबे का लेख "सीखे सम्मान करना" अच्छा लगा वास्तव में आज मध्यमवर्गीय परिवारों में जहां लड़कियों का नौकरी करना उचित समझा जाता है, साथ ही आवश्यक भी वहीं पर अपनी रूढ़िवादी मानसिकता से बाहर निकलने को लोग तैयार नहीं होते।

यह भी सच है कि सभी घरों में नौकरी पेशा लड़की पर शक नहीं किया जाता। फिर भी घर से लड़की को ऐसे ही संस्कार मिलने चाहिए कि उस पर कोई उंगली ना उठाए। ऐसा नहीं है कि इस समस्या का समाधान नहीं है, जरूरी है कि समाज अपना दृश्टिकोण बदले।

**05** **01.12.1990**

रंजना राहिणे का लघु लेख "धोखा" बहुत अच्छा एवं विचारणीय था। बिना सोचे–समझे किसी भी पुरूष से मैत्री गलत बात है। हर लड़की एवं महिला को चाहिए कि वह जरूरी पूछताछ के बाद ही मैत्री करें।

**06** **30.08.1992**

सुख दुख की बात मर्मस्पर्शी लगी। संपन्नता एवं वैभव के प्रतीक समझे जाने वाले प्रिंस चार्ल्स और लेडी डायना के दांपत्य में पड़ी दरार से यह बात सिद्ध हो गई कि भौतिक वैभव ही सुख का वास्तविक पैमाना नहीं है बल्कि हार्दिक प्यार ही मानसिक सुख व संपन्नता प्रदान करता है।

**07** **20.09.1992**

सुनीताजी आपने भी क्या लिख दिया और वह भी पतिदेव के नाम! यदि हम उनकी दोस्त हो जाएगी तो उनके जन्म सिद्ध अधिकार– "पत्नी पर शासन" करने का क्या होगा?

**08 नारी के प्रति नारी–** **04.10.1992**

सतीश परमार का लेख पढ़ा। नारी ही नारी पर अत्याचार करती है, पर पुरूष वर्ग को अनभिज्ञ नहीं बना रहना चाहिए। यदि वह सजग रहेगा तो उसकी मां व बहन, उसकी पत्नी पर अत्याचार करने का साहस कभी नहीं करेगी।

**09 नारी अपनी निर्णय क्षमता पर भरोसा रखें** **01.11.1992**

विमला पिपाड़ा का लेख पढ़ा। समाज में कितने ही परिवर्तन आए, पर नारी की सोच में फर्क नहीं आया उसके मन में यह बात घर कर गई है कि पुरूष प्रधान समाज में वह बेहद कमजोर है। इससे उसके आत्मविश्वास में कमी होती है, जिससे वह कोई भी निर्णय स्वयं नहीं ले पाती।

**10 वे करती है व्यक्तित्व का विकास** **18.09.1993**

एक संयुक्त परिवार की घटना याद आ रही है हमारी करीबी रिश्तेदार है श्रीमती मेहता। विश्वास ही नहीं होता कि उस परिवार में बहुओं के व्यक्तित्व के विकास के लिए इतना समय दिया जाता है। उनकी चारों बहुएं किसी ना किसी रचनात्मक कार्य में निपुण है। बहुओं के साथ–साथ वह भी घर की जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाती है। घर में पांचों स्त्रियों में से क्रम से एक पूरे दिन के लिए गृह कार्य से पूर्ण रूप से मुक्त रहती है। वह पूरा दिन उसी का होता है। वह चाहे जब सो सकती है, उठ सकती है, पिकनिक पर जा सकती है, अपनी इच्छा अनुसार दिन व्यतीत कर सकती हैं। यहां तक की उस दिन उसके बच्चों की जिम्मेदारी अर्थात टिफिन बनाना, नहलाना, तैयार कर स्कूल भेजना भी श्रीमती मेहता ही करती है। इसके अलावा चारों में से एक–एक बहू क्रम से कहीं बाहर जाकर कोई कोर्स भी ज्वाइन करती है। श्रीमती मेहता उनके कार्य के बारे में बराबर जानकारी रखती है। पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ लेकिन चारों बहुए के मिलने के बाद पता चला यह शारीरिक व मानसिक रूप से कितनी स्वस्थ है। वे संयुक्त परिवार को एकल परिवार से भी श्रेष्ठ मानती है। यह सब श्रीमती मेहता के प्रोत्साहन व सुव्यवस्थित घर प्रबंध का ही फल है।

यदि सभी संयुक्त परिवारों में ऐसा वातावरण निर्मित हो जाए तो किसी भी लड़की को नहीं लगेगा कि उसकी शादी हो गई है और वह बहू बनकर घर में कैद हो गई है। उसकी रूचियों का भी शादी के साथ अंत नहीं हो जाएगा। उसकी कला भी दम नहीं तोड़ेगी अपितु समय मिलने पर वह अपनी कला का प्रदर्शन करके अपने घर को नया रूप देगी। उसका मानसिक विकास भी होगा। लेकिन इन सब बातों के लिए परिवार से सहयोग की पूर्ण आवश्यकता है।

**11 वे करती है व्यक्तित्व का विकास** **10.10.1993**

सुधा नाहटा का लेख प्रेरणादायक होने के साथ अचरज भरा भी है। यदि किसी परिवार की मुख्य प्रबंधक यानी सास प्रोत्साहित करने वाली, खुली मानसिकता वाली हो तो उस परिवार का कभी विघटन नहीं होगा।

**12 गुण या कमजोरी**

'अरे इतनी पढ़ी–लिखी बहू लाई हो, घर को भी कितना व्यवस्थित रखती है। अमर के तो भाग्य ही खुल गए।' सभी की माधुरी के प्रति यही राय थी। समय बीतता गया। माधुरी ने अपनी पढ़ाई को कितनी ही बार आगे बढ़ाने का सोचा, लेकिन किसी को इसकी आवश्यकता ही नहीं महसूस हुई और उसे स्वयं भी अपने लिए इतना समय नहीं रहा। दो–दो बच्चों की पढ़ाई व घर का कामकाज। कब पंद्रह वर्ष बीत गए, पता ही नहीं। आज पतिदेव ने एक इंग्लिश वर्ड का अर्थ पूछा तो न बता पाने के कारण सुनने को मिला–'तुम इतनी पढ़ी–लिखी भी हो विश्वास ही नहीं होता। जरा मार्कशीट लाकर तो बताना।' इतना सुनते ही माधुरी के पैरो तले जमीन ही खिसक गई। वह भरी आँखों से इतना ही बुदबुदा सकी–'त्याग व सहनशीलता एक सीमा तक ही सद्‌गुण है।'

**13** **10.04.2002**

वाह राजरानीजी, आपने भी क्या लेख लिख दिया। वह भी गृहस्थी के काम का वेतन माँगने के नाम। यदि हम यह माँग करने लग जाएँ तो स्त्री के पल्लू से बँधे शब्दो त्याग, बलिदान, सहनशीलता का क्या होगा? लेकिन हाँ, यदि सभी स्त्रियाँ एक मत होकर यह माँग करे तो पुरूषों की क्या बिसात जो उसे उसके हक का सम्मान नहीं दे।

**14 आत्महत्या के और भी कारण है** **15.04.2004**

महोदय, नवविवाहिता को आत्महत्या की और अग्रसर करने वाले कुछ और भी महत्वपूर्ण कारण हैं। नवविवाहिता जब ससुराल के नए माहौल में सामंजस्य स्थापित करती है तो उसे सभी से सहयोग की आवश्यकता होती है और सबसे ज्यादा अपने पति से। और वह भी यदि उसे समय पर सहयोग नहीं करता है तो वह उपेक्षित महसूस करती है व मानसिक यंत्रणा भोगते–भोगते आत्महत्या की ओर अग्रसर होती है। यह परिस्थिति बच्चा होने के बाद ज्यादा निर्मित होती है। यदि कोई बहु संयुक्त परिवार में रहती है और कोई रचनात्मक कार्य करना चाहे तो उसे सबसे पहले अपने घरवालों का ही विरोध सहन करना पढ़ता है। उसका आधा उत्साह तो काम शुरू होने के पहले ही ठंडा हो जाता है और यदि वह अपनी मर्जी से कोई कदम उठा भी लेती है तो सभी बातें उसे अकेले ही सहन करनी पढ़ती है। सहयोग की भावना तो दूर रही, उसे प्रेरणा देने वाला पति भी इस बार आगे नहीं आएगा व उसे अपने निर्णय लेने पर मानसिक यंत्रणा देगा। बहुत से परिवारों में बहू चाहे कमाती भी हो तो भी उसे आर्थिक स्वतंत्रता न के बराबर रहती है। पहले घर की जरूरतों का, फिर पुरूषों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के बाद उसकी आवश्यकताओं का नंबर आता है। कोई वस्तु उसके लिए बहुत जरूरी हो तो पूर्ति भी की जाएगी वह भी तानो के साथ व समय निकल जाने के बाद। उसके लिए भी उपेक्षित महसूस करती है। जरूरतों की समय पर पूर्ति हो चाहे वह कमाए या न कमाए। ये छोटी–छोटी बाते उसके दिमाग में बैठती जाती हैं। इससे उसके जीवन में उदासी व घोर निराशा छा जाती है। यदि पति–पत्नी एक–दूसरे को मानसिक रूप से समझे व जरूरतों का ध्यान रखें तो शायद ही कोई युवती आत्महत्या की ओर अग्रसर होगी। हालात चाहे जो भी हो, हारकर मौत को गले लगाना कायरता ही है। हर अंधेरी रात के बाद सवेरा जरूर है।

**15 माता–पिता अपनी सोच बदले** **20.04.2004**

महोदय, शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करें (1 अप्रैल) पढ़ा। शिक्षा प्रणाली में तो परिवर्तन न जाने कब होगा, लेकिन रिजल्ट आने के पूर्व माता–पिता को अपने व्यवहार में परिवर्तन जरूर कर लेना चाहिए। प्रत्येक माता–पिता की आशा रहती है कि उनका बच्चा कक्षा में प्रथम आए। 80–90 प्र.श. अंक पाए, यह मानसिकता शुरू से ही बच्चे के दिमाग में फिट कर दी जाती है। बच्चा परीक्षा भी इसी तनाव में देता है व रिजल्ट आशा के विपरित होने पर बड़ा डिप्रेस हो जाता है और कभी–कभी अपनी जान की बाजी भी लगा देते है। ऐसा माहौल कदापि न बनाएँ। रिजल्ट जो भी आए उसमें उसका हौसला बढ़ाएँ व अगली बार अच्छे अंक लाए, सफलता प्राप्त करे यही उसे सिखाएँ। कम अंक लाने पर, फेल होने पर उसे नहीं कोसे। सभी बच्चे सभी क्षेत्र में प्रवीण नहीं होते।

**16 आँचल, कहाँ गया जी!** **02.05.2004**

छोड़ दो आंचल जमाना क्या कहेगा रीमिक्स में मॉडल ने आंचल तो ओड़ा ही नहीं है। जमाना तो यह कह रहा है पहले आंचल तो डालो, फिर छोड़ने की बात करना।

**17 अकेली दृढ़ इच्छाशक्ति ही काफी नहीं** **02.06.2004**

महोदय, कमजोर इच्छा शक्ति पढ़ा। यदि लड़की दृढ़ इच्छाशक्ति रख भी ले व अपने मां–बाप से बगावत करके शादी कर भी ले तो क्या गारंटी की ससुराल वाले व पति जिंदगी की कठिन राहो में उसे साथ देंगे ही? लड़की के जीवन में बहुत उतार–चढ़ाव आते हैं, जब उसे अपने मां–बाप के संबल की आवश्यकता होती है। उस समय वह क्या करें ? वह केवल अपनी अकेली की जिंदगी नहीं देखती अपीतु सभी को साथ लेकर चलना जानती है, जो कि एक पुरूष नहीं समझ सकता। यदि वह अपने मां–बाप के कहे अनुसार शादी करती है तो यह उसका दब्बूपन नहीं, महानता है कि वह उनकी इज्जत करती है और उन्हें मान सम्मान देती है। यदि वह अपनी मर्जी से शादी करती भी है तो क्या ग्यारंटी कि उसका पति उससे त्याग, सहनशीलता की आशा नहीं करेगा और जरा सा भी विरोध हुआ तो तलाक तक की नौबत नहीं आएगी? प्रतियोगी परीक्षा में अव्वल आने वाली लड़की के सिर पर मां–बाप, गुरू का आशीर्वाद रहता है। इसके विपरित बिना अनुमति के शादी करने पर मां–बाप के आशीर्वाद के बिना वह मानसिक रूप से टूट जाएगी व जिंदगी की परीक्षा में अव्वल नहीं रह पाएगी।

**18** **02.06.2004**

"तुम कहो, मैं.......बेटी!" पढ़ा। हर गर्भवती महिला के लिए यह लेख पठनीय व अमल करने योग्य है। हर मां अपनी आशानुरूप स्वस्थ, सुंदर बच्चे को जन्म देगी, पर इसके लिए उसे 9 महीने अपने व्यवहार, अपने विचारों को सकारात्मक रखना होगा।

**19 कहॉ है धारावाहिक?** **06.06.2004**

पहले हम टीवी में धारावाहिकों के बीच विज्ञापनों को देखते थे और अब ऐसा लगता है कि विज्ञापनों के बीच धारावाहिक देख रहे हैं।

**20 कैसा जादू किया!** **27.06.2004**

पहले "कहो ना प्यार है" फिर "कोई मिल गया" और अब "कैसा जादू किया" राकेश जी आपका "क" प्रेम जिंदाबाद।

**21** **14.07.2004**

"व्यायाम हे तप" पढ़ा। यह बात बिल्कुल सत्य है कि व्यायाम से शरीर निरोगी रहता है और स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन रहता है। स्वस्थ मन से ही सभी कार्य शुभ कार्य संपादित होते हैं, फिर क्यों ना व्यायाम को दैनिक दिनचर्या में शामिल कर लें?

**22 निर्णय पर पुनर्विचार हो** **24.07.2004**

महोदय, "अफीम की खेती" पड़ा। खेती पर प्रतिबंध लगाने से तो अच्छा है उन वस्तुओं पर प्रतिबंध लगे, जिसमें इसका दुरूपयोग हो रहा है। वरना हम इससे होने वाले लाभ से भी वंचित हो जाएंगे।

**23 मुसद्दीलाल** **29.08.2004**

सब टीवी पर प्रसारित धारावाहिक "ऑफिस–ऑफिस" में मुसद्दीलाल 100–500 के नोट ऑफिस में ऐसे बाटते हैं जैसे गोली या चॉकलेट हो।

**24 सुखा गला** **31.10.2004**

उधर सेंसर की कैंची भोथरी हुई और इधर हीरोइनों ने अपने गले की पोशाकों को और फैला लिया।

**25** **24.11.2004**

'क्या बीवियां ऐसे धमकाती होगी' पढ़ा। कुछ की बीवियां इस तरह से भी धमकाती होगी! देखें जरा–

1) **फटाके बनाने वाले को**– जलाकर राख कर दूंगी।
2) **आर्किटेक्ट को**– चेहरे का नक्शा बिगाड़ दूंगी।
3) **फ्रूट सेलर को**– खरबूजे की तरह रंग मत बदलो।
4) **ऑप्टिशियन को**– आंखे नीची करके बात करो।
5) **टेलीफोन ऑपरेटर को**– मुझे मत डराओ, अभी पुलिस के नंबर मिलाती हूं।
6) **तांगे वालों को**– घोड़े बेच कर सोना भुला दूंगी।
7) **प्रोफ़ेसर को**– किताबी कीड़ा बना दूंगी।
8) **बीमा वाले को**– भविष्य के लिए मत डराओ, अभी की सोचो।
9) **इलेक्ट्रीशियन को**– दिमाग के सारे फ्यूज जोड़ दूंगी।

**26 अपने लिए गड्ढे ना खोदे** **27.11.2004**

महोदय, "ऐसी कौन सी मजबूरी है" पढ़ा । कोई मजबूरी नहीं है, बात सिर्फ रातों–रात शोहरत व दौलत पाने की है, वह भी बिना मेहनत व कम समय में। बहुत ही कम युवतियां आर्थिक मजबूरी के कारण ऐसा करती है। अधिकतर तो अपने ऐशो–आराम के लिए ही ऐसा करती है। वे अच्छे उच्च घराने की युवतियां होती है। मध्यमवर्गीय परिवार की युवतियां तो भी संस्कार व समाज को मानती है। रोजमर्रा की जिंदगी में बदलाव लाने के लिए कुछ नया कर दिखाने की चाह में वे ऐसा करती है। वे यह नहीं सोचती कि बदले में वे नारी जाति के लिए ही गड्ढे खोद रही है, जिसका परिणाम लगातार बलात्कार की बढ़ती संख्या बता ही रही है।

**27 शर्मिला का साहस** **28.11.2004**

सेंसर बोर्ड की अध्यक्ष बनने पर शर्मिलाजी शायद इतना साहस तो दिखाएगी की बिंदास बालाओं के देह प्रदर्शन के दुःसाहस पर प्रतिबंध लगा दे।

**28 पिता की जिम्मेदारी** **15.12.2004**

महोदय, संपादकीय "पिता की जिम्मेदारी" पढ़ा। जब अधिकतर महिलाएं घर की सभी समस्याओं को हल करने में अपना योगदान दे सकती है, तो पुरूष बच्चों की जिम्मेदारी उठाने में क्यों पीछे रहते हैं ? जब बात पिता की जिम्मेदारी निभाने की आती है, यानी बीमार बच्चे की देखभाल करने की आती है तो लोग व समाज क्या कहेंगे जैसे विचार बीच में आ जाते हैं। अपने ही बच्चे की अपने ही घर में देखभाल करने में शर्म कैसी? भारत सरकार ने भी पितृत्व अवकाश की सुविधा दे देती है, लेकिन पितृत्व अवकाश के दिन बच्चे की माता को अवकाश नहीं मिलना चाहिए। नहीं तो, घर मे ही उस महिला की दोहरी जिम्मेदारी बढ़ जाएगी।

**29 कलरफुल बॉडी** **19.12.2004**

अभी तो हीरोइनों ने नाभि सज्जा कराई है। लगता है वह दिन दूर नहीं, जब वे कपड़ो के स्थान पर शरीर को कपड़ो की तरह रंगेगी?

**30 मानसिक रोगी**

पूजा जी आपने जिस्म दिखाकर पहले ही बहुत बड़ा पाप कर दिया है। अब रोग दिखाकर क्यों स्वस्थ मानसिकता वाले दर्शकों को मानसिक रोगी बना रही हो?

**31 डूबती नैया** **13.02.2005**

सेंसर बोर्ड की कश्ती में बैठने वाले उसे हर बार डुबोते जा रहे हैं। मंजिल पर ले जाने के लिए शायद फिर नए अध्यक्ष की तलाश पड़ेगी।

**32 सच्चा प्यार** **28.03.2005**

महोदय, एक समाचार "प्यार अंधा होता है" पढ़ा। प्यार अंधा नहीं होता। अंधे तो युवा प्रेमी युगल हो जाते हैं जो आंखे होते हुए भी भविश्य में आने वाली कठिनाईयों को देखने का साहस नहीं करते । बिना सोचे समझे शादी का फैसला कर लेते हैं और बदनाम प्यार को करते हैं। आज हर युवा प्रेमी युगल शादी के पहले काल्पनिक सपने देखता है जो कि यथार्थ के धरातल पर संभव ही नहीं। और संभव भी हो तो उसके पास इतना समय, सहनशक्ति व धैर्य नहीं कि उसे पूर्ण कर लें। यदि प्यार किया है तो डरना क्या? उसे निभाने का साहस भी करें तो कोई नहीं कहेगा कि प्यार अंधा होता है। सब यही कहेंगे "प्यार सच्चा" होता है।

**33 बम–चिक!** **24.04.2005**

बम–चिक–बम यानी देवेंद्र जी का कार्टून अच्छा लगा। खोजी कैमरे के कारण बेचारे हीरो को बड़े बंगले के बावजूद खुली हवा के नीचे आराम करना पड़ रहा है।

**34 इमरजेंसी की नोबत ना आने दे** **26.04.2005**

महोदय, "जमाना मॉडल मेडिसिन का है" तथा "जमाना योग्यता का है" दोनों ही पत्र पढ़े। जमाना तो प्रकृति से जुड़े "योग व प्रणायाम" का भी है। दृढ़ इच्छाशक्ति, संकल्प तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति एक आशावादी विचार का भी है। कोई भी रोगी वर्जित चीजों के सेवन ना करने के प्रति दृढ़ हो जाए तो इमरजेंसी की नौबत ही ना आएगी व संयम से ही जिंदगी की गाड़ी चलेगी।

**35 मिली से राहत** **15.05.2005**

धारावाहिक 'मिली' की शुरूआत से ऐसा लग रहा है कि दर्शकों को सास–बहू के घिसे–पिटे धारावाहिकों से निजात मिलेगी और स्वस्थ मनोरंजन मिलेगा।

**36** **18.05.2005**

"पहला दिन नौकरी का" पढ़ा। किसी भी कार्य का पहला अनुभव बहुत बैचेनी और घबराहट पैदा कर ही देता है ऐसे में यदि पहले से ही थोड़ी तैयारी कर ली जाए तो आने वाली कठिनाईयों से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता है।

**37 ग्यारंटी** **22.05.2005**

आजकल की फिल्मों में एक आयटम सांग की एंट्री यानी फिल्मों के सौ प्रतिशत हिट हो जाने की गारंटी।

**38 चुम्बक** **19.06.2005**

आज के निर्माता चुंबन दृश्य द्वारा दर्शकों को सिनेमाघर तक लाने के लिए चुंबक जैसा इस्तेमाल कर रहे हैं।

**39 वाह बबली!** **26.06.2005**

'बंटी और बबली' फिल्म में बबली बच्चा होते ही उसे लेकर भाग जाती है। प्रसूता और डॉक्टर द्वारा दी गई रिकवरी काबिले गौर है।

**40 लंबे हाथ** **10.07.2005**

टाईगर कितना भी तेज दौड़ ले, कानून के लंबे हाथ उसकी गर्दन दबोच लेंगे।

**41 मिली को मिली** **31.07.2005**

देश में बेरोजगारी की विकराल स्थिति का पता सीरियल मिली की मिली को नौकरानी मिली से पता चलता है।

**42 अभिनय** **21.08.2005**

नायिकाओं के साथ–साथ नायक भी देह प्रदर्शन करने लग जाएंगे तो फिल्मों में अभिनय का प्रदर्शन कौन करेगा?

**43 वाह नानाजी!** **04.09.2005**

नाना पाटेकर ने फिल्मों में नाना रूपों में अभिनय कर अब रचनात्मक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए रंगमंच को चुनकर अपनी अभिनय क्षमता को बखूबी प्रदर्शित किया है।

**44 बच्चों, बचके रहो!** **11.09.2005**
"बरसात" के सीन आते ही नायिका के कपड़े इतने छोटे हो जाते हैं कि बच्चे भी पहन ले।

**45 लाइफ–लाइनः फ्लिप** **18.09.2005**
कौन बनेगा करोड़पति (द्वितीय) देख कर बच्चे कुछ सीखे या ना सीखे। मौखिक परीक्षा में चौथी लाइफ–लाइन 'फ्लिप' इस्तेमाल करना जरूर सीख लेंगे।

**46 अमिताभ** **15.10.2005**
अरबपति बन चुके अमिताभ अपने दर्शकों को करोड़पति बनाने में जुटे है।

**47 चटखारे** **22.10.2005**
केबीसी'–2 के जॉन–बिपाशा एपिसोड में उनके ज्ञान का कम मोहब्बत का अधिक प्रदर्शन हुआ। अमिताभ ने भी चटखारे लिए।

**48 ब्रेक जोर से ना लगाए** **29.10.2005**
महोदय, "क्या जनसंख्या वृद्धि पर चीन की तरह ब्रेक लगाए" पढ़ा। यह भी कोई दुर्घटना का अंदेशा होता है तो ब्रेक लगा कर उसे रोका जा सकता है। यही बात जनसंख्या की गुणोत्तर वृद्धि पर भी लागू होती है। ब्रेक लगाए लेकिन इतना कठोर यदि यह भी नहीं कि चीन जैसी नई जनसंख्या संबंधी कठिनाई का सामना करना पड़े।

**49 रील–रियलः लाइफ!** **06.11.2005**
भाग्य श्री ने रियल लाइफ में घर बसा कर भाग्य चमका लिया। रील लाइफ में भाग्य ने साथ नहीं दिया। अब फिर आजमाइश की तैयारी।

**50 आंसुओं के भेद** **09.11.2005**
महोदय, अभी तक मगरमच्छ के आंसू, खुशी के आंसू, गम के आंसू, दुख के आंसू आदि के बारे में सुना था, लेकिन अब प्याज के आंसू भी सुनने को मिल रहा है।

**51 पारदर्शिता** **12.11.2005**
केबीसी 2 में प्रतिभागी को आउट करने के बाद फिर बुलाना केबीसी की पारदर्शिता दर्शाता है। दर्शकों का मन जीत लिया।

**52 वृद्धाश्रम जाने का रास्ता** **24.11.2005**
महोदय, आजकल संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार ने ले ली है, जिससे बच्चों को दादा–दादी और नाना–नानी का प्यार तो बहुत दूर अपने स्वयं के पालकों से शारीरिक व व मानसिक पोषण भी ठीक ढंग से नहीं मिल पाता। अधिकतर एकल परिवार में पति–पत्नी दोनों नौकरी करते हैं। माता–पिता की महत्वकांक्षाओं का बोझ बच्चा बेचारा जिए तो कैसे? जब बच्चा बेबी सिटिंग व नर्सरी में अपना बचपन बिताएगा तो वह दिन दूर नहीं जब वह अपने माता–पिता को ही बड़ा होने पर वृद्धाश्रम भेज देगा।

**53 अति सर्वत्र वर्जयेत** **21.12.2005**

महोदय, रूपए के आसपास में व्यसन का अर्थशास्त्र पढ़ा। जब किसी भी चीज की अति हो जाती है तो वह व्यसन का रूप ले लेती है व्यसन में व्यक्ति को अपने घर परिवार का कोई ध्यान नहीं रहता है, वह अपने सभी सामाजिक मूल्यों को ताक में रखकर उसे पूरा कर ही लेता है। यह बात बिल्कुल सत्य है कि आज के भौतिकतावादी युग में किसी बात का शौक रखना तनाव को कम करने का सबसे अच्छा साधन है लेकिन उसे अति के रूप में अपनाकर व्यसन का रूप कदापि न बनने दें।

**54 अजीब बात** **24.12.2005**

यह कितनी अजीब बात है कि आज की हीरोइन को अपने साफ–सुथरे होने का प्रमाण पत्र फिल्म में स्नान–सीन कर देना होता है।

**55 फिस्स और फुस्स** **26.12.2005**

धारावाहिकों में समस्याओं/प्रश्नों के हल चुटकी में ढूंढने वाली "तुलसी और पार्वती" केबीसी में फिस्स हो गई।

**56 रीमेक की कतार** **07.01.2006**

सीक्वल और रिमिक्स फिल्मों की गति ऐसी ही रही, तो नए विशयों से दर्शकों को हाथ धोना पड़ेगा।

**57 अच्छा किया....** **04.02.2006**

नई फिल्मों की बसंती बहार में अच्छा किया आपने बता दिया, क्यों देखें? वरना हम तो कारण ही ढूंढते रह जाते।

**58 भूखे भजन न होई गोपाला** **17.02.2006**

रूपये के आसपास में 'भोजन की जुगाड़ कितनी जरूरी?' पढ़ा। भूखे पेट ना होई गोपाला। पेट में भोजन नहीं होगा तो ईश्वर का स्मरण करने में भी मन नहीं लगेगा। इसलिए व्यक्ति की पहली जरूरत तो भोजन प्राप्त करना ही है। गरीबी दूर करने के लिए गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम पर राशि खर्च करने के बजाय आम आदमी की जरूरत को समझें। गरीब व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराएं जिससे वह जीवन भर के लिए आत्मनिर्भर हो जाए। और जब भोजन के साथ प्रयास जुड़ जाएगा तो वह ज्यादा स्वास्थ्यकारी, गुणकारी व आनंदकारी भी होगा।

**59 वह दिन दूर नहीं....!** **24.03.2006**

'रूपये के आसपास' तंभ में 'आर्थिक विकास....महिलाएँ' पढ़ा। वर्तमान में आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान उनकी क्षमता से कई गुना कम ही है, क्योंकि अभी भी बहुत से क्षेत्रों में उनकी पढ़ाई–लिखाई व स्वास्थ्य पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। आज महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए लड़ते हुए शिखर पर जा पहुँची हैं। यह उनके आत्मविश्वास, सच्ची लगन व मेहनत का ही फल है। भारत में महिलाओं की स्थिति भी विश्व के विभिन्न देशों की तरह बेहतर तभी हो सकती है जब उन्हें परिवार, समाज व राश्ट्र से पूरा सहयोग मिले और वह दिन भी दूर नहीं जब उन्हें भी आगे बढ़ने का मौका मिले। इसी से देश की सभी महिलाओं का संपूर्ण विकास जुड़ा है। इस तरफ ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक है।

**60** **17.05.2006**

'कभी इश्क.... बीवी से' पढ़ा। वास्तव में भौतिक साधनों से परे भी महिलाएं बहुत कुछ चाहती है जिसे पत्र के द्वारा बखूबी दर्शाया गया है। शादी के बाद समय–समय पर 'वुइंग' का अपना अलग ही महत्व है और वैवाहिक रिश्ते में रूमानियत बरकरार रखने के लिए यह जरूरी भी है।

**61** **21.06.2006**

आज के युवा द्वारा कंप्यूटर का इस्तेमाल गलत तरीके से करने पर उन्हें कई प्रकार के आंखों के अन्य रोग हो रहे हैं। वैसे किसी भी उपकरण के इस्तेमाल का सही तरीका व उसे इस्तेमाल करने वाले समय का ध्यान रखा जाए तो ही आप उसके लाभ उठा सकते हैं वरना हानि होने में देर नहीं लगती। सच्चाई बताने वाली मैडम मोहिनीजी बधाई की पात्र है।

**62 विवाह की न्यूनतम आयु में वृद्धि जरूरी** **09.09.2006**

मध्यप्रदेश शासन विवाह की न्यूनतम आयु में वदृधि पर विचार कर रहा है। आज के युवा और युवती शादी से ज्यादा अपने करियर को महत्व देते हैं और यह भविष्य के लिए नितांत आवश्यक भी है। उन्हें कोई भी डिग्री या जॉब प्राप्त करने के लिए कम से कम 23 या 24 वर्श की आयु तक कड़ी मेहनत करनी ही पड़ती है जो कि शादी के बाद पारिवारिक जिम्मेदारी के रहते संभव ही नहीं है। वैसे भी आजकल संयुक्त परिवार एकल परिवार में बदल गए हैं। जल्दी शादी होने पर युवती मां बनने पर बच्चे को भी सही देखभाल नहीं कर पाएगी व स्वयं के स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं रख पाएगी। छोटी–छोटी बातें पति–पत्नी में कलह का कारण बन जाएगी।

**63** **04.10.2006**

रामलीला, कुछ रोचक प्रसंग पढ़ा। आज के इस तनाव भरे वातावरण में, सभी तरफ नकारात्मक समाचारों के बीच यह लेख लाफ्टर शो से भी ज्यादा अंदर तक गुदगुदा गया। लेखक वाकई में धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने पूरे परिवार को हंसा दिया। कभी ऐसी रामलीला देखने को मिल जाए तो मजा और भी दोगुना हो जाए।

**64 कलियुगी महाभारत** **04.11.2006**

छोटे पर्दे पर इन दिनों सारे धारावाहिक कलयुग की महाभारत दर्शा रहे हैं। कहीं भाई–भाई के झगड़े, तो कहीं सास–बहू तकरार छोटा पर्दा लड़ाई–झगड़ों का कुरूक्षेत्र बनकर रह गया है।

**65 वाह पृथ्वीराज** **25.11.2006**

स्टार प्लस का सीरियल 'पृथ्वीराज चौहान' बच्चों के साथ बड़ो को भी बहुत पसंद आ रहा है।

**66 किशोर–किशोरियों को सोच–समझकर दीक्षा दें** **27.11.2006**

आचार्य गण चाहे वह मंदिरमार्गी हो या स्थानकमार्गी, जब भी दीक्षा प्रदान करते हैं, बहुत ही ज्यादा सोच समझकर निर्णय लेते हैं। वे किशोर–किशोरियों को दीक्षा देने के पूर्व अपने साथ बिना दीक्षा दिए रखते हैं जिन्हें वेरागण बहन या भाई कहा जाता है, जो साधु जैसा ही जीवन व्यतीत करते हैं यानी उनके जैसे ही क्रियाए व उनसे ज्ञान, ध्यान सीखते हैं।

यदि किसी का इन सभी क्रियाओं के बीच मन पलट जाए तो वापस ग्रहस्थ जीवन में आसानी से जा सकता है। उसके बाद उनकी छोटी दीक्षा होती है वह कुछ समय पश्चात बड़ी दीक्षा प्रदान की जाती है।

**67 21वीं सदी की बात** **30.11.2006**

संपादकीय, लिंग भेद का औचित्य पड़ा। फिल्मो और दूरदर्शन ने कार्यक्रमों में स्त्रियों की जिस छवि को दिखाया जा रहा है वह तो 21 वीं सदी से भी आगे की लगती है। लेकिन वर्तमान में उसे उस स्थान पर पहुंचने के लिए कितने संघर्श मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है उसे दिखाना जरूरी है। आज भी स्त्रियों को कोई भी मुकाम हासिल करने के लिए सबसे पहले घर परिवार समाज आदि से संघर्श करना पड़ता है। यदि स्त्री से भी आगे आकर देश सेवा की आशा करे तो सभी पुरूषों को लिंग भेद की मानसिकता से निकलकर सहयोग करना पड़ेगा तो ही यह अंतर्राष्ट्रीय पटल पर अपने देश का भी नाम रोशन कर सकेगी।

**68 कौन सा च्यवनप्राश?** **13.01.2007**

छोटे पर्दे पर दो महानायक अमिताभ–शाहरूख सर्दी के मौसम में दो अलग–अलग कंपनियों के च्यवनप्राश का विज्ञापन कर दर्शकों को दुविधा में डाल रहे हैं।

**69 सोना–चाँदी** **20.01.2007**

केबीसी तृतीय में शाहरूख खान अपने प्रतियोगी के करोड़पति न बनने पर यह ना कह दें कि– सोना–चाँदी खाता तो करोड़पति बन जाता।

**70** **14.02.2007**

सुधा मूर्ति, अपनी लेखनी के माध्यम से जिंदगी की सच्चाइयों से रूबरू करवा रही है। यह सच है कि जीवन के इन अनमोल अनुभवों की साझेदारी से सुख की राह पाई जा सकती हैं।

**71** **21.02.2007**

सुधा मूर्ति जी के अनुभव जिंदगी की सच्चाइयों से परिचय करवा जाते हैं। यह सच है कि जिंदगी की वास्तविक खुशी भौतिक साधनों को इकट्ठा करने में नहीं अपितु एक–दूसरे के सुख–दुख व मन की बातें जानकर उन्हें बांटने में है। इसी साझेदारी में जीवन का सुख निहित हैं।

**72 वैराग्य वीतराग भावना** **20.07.2007**

जैन समाज के साधु–साध्वी नंगे पैर, दो जोड़ी वस्त्र और भिक्षा पर अपना जीवन व्यतीत करने के अलावा भी कठिन दिनचर्या का पालन करते हैं। समय–समय पर उपवास, एकासना आदि तपस्या कर अपनी आत्मा का उद्धार करते हैं। अपने व्याख्यान द्वारा लोगों में धर्मजागरण व आत्मा के उद्धार के लिए प्रेरणा देते हैं। अपने बालों को काटने के लिए कैंची आदि किसी यंत्र का उपयोग भी कम से कम करते हैं। एक नगर से दूसरे नगर जाने के लिए कभी किसी वाहन का उपयोग नहीं करते।

**73 करियर–कुरियर** **26.07.2007**

नईदुनिया का युवाओं के करियर में मदद करने वाला यह प्रयास बहुत अच्छा लगा। अपॉर्चुनिटीज एंड ऑप्शन के अंतर्गत तो युवा व कंपनी दोनों को ही फायदा होगा। अवसर के इस सकारात्मक प्रयास से बहुत से युवाओं का सपना सच हो जाएगा। अवसर में महिलाओं के लिए भी पत्राचार कार्यक्रम की जानकारी मिल जाए तो सोने में सुहागा होगा।

**74 समाधान** **28.07.2007**

'सोच का संकट' संपादकीय पढ़ा। इंसान कभी भी अपनी गलती स्वीकार नहीं करता, अपनी सोच से अपनी गलती का भी जिम्मेदार दूसरों को ही ठहराता है और तो और भगवान को भी नहीं बख्शता है। लेकिन यदि हम महापुरूशों के चित्र पूजने की जगह उनके चरित्र को आचरण में उतारने की कोशिश करें तो समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाएगा। यदि स्वयं से ही गलत बातों का विरोध शुरू करें तो निश्चित ही भविश्य में इसका फल हमें प्राप्त होगा।

**75 वाहन से कमतर मनुष्य** **11.09.2007**

'सड़क, वाहन और मनुश्य' संपादकीय पढ़ा। सड़क व मनुष्य का सदियो से गहरा रिश्ता है। यह तो वाहनों में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि के कारण उनके रिश्ते में परेशानी आ गई है। जब से तेज गति के वाहन सड़कों पर दौड़ने लगे हैं, आम आदमी तो बिना डर के चलना ही भूल गए हैं। सड़क पर जब तक कोई बड़ी दुर्घटना ना हो, तब तक उसे बनाने तो दूर की बात गड्ढे भरने तक की कोई खोज–खबर नहीं लेता। वैसे भी वाहन से ज्यादा मनुष्य का ही सड़क पर अधिक अधिकार है, वाहन तो एक बार क्षतिग्रस्त होने पर फेंककर दूसरे भी खरीदे जा सकते हैं लेकिन मनुष्य की अनमोल जिंदगी नहीं।

**76 काश! ऐसा हो जाए ?** **12.09.2007**

सपने देखने से ही मानव आगे बढ़ता है, लेकिन सपने देखने के साथ–साथ उन्हें एक–एक करके हकीकत में भी बदलते जाएँ। नहीं तो अपना भी हाल शेखचिल्ली जैसा हो जाएगा और अंत में कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।

**77 शपथ से होता है क्या?** **12.12.2007**

शपथ से कुछ नहीं होता। होता तो देश, समाज की यह हालत ना होती। यदि सभी बुराइयां शपथ से ही समाप्त हो जाती तो आज दिन दूनी रात चौगुनी बुराइयां पनपती ही नहीं। आज शपथ का अर्थ 'प्राण जाए पर वचन न जाए' जैसा कहां रह गया है? यह तो केवल दिखावे, रौब जमाने के लिए खाई जाती है। जैसे बच्चों को झूठ ना बोलने की, लड़ाई नहीं करने की, चोरी ना करने की शपथ दिलाई जाती है व अगले ही क्षण वे उसे भूल जाते हैं, ऐसा ही आज के मानव का हाल है। पति–पत्नी के रिश्ते में भी सात–वचन निभाने की शपथ दिलाई जाती है, लेकिन वे यदि दिल से निभाए जाते तो क्यों आज समाज में इतने तलाक होते। यदि व्यक्ति अपने सत्कर्म के लिए संकल्पवान है तो उसे किसी शपथ की आवश्यकता नहीं।

**78 सप्ताह में एक दिन त्याग करें** **25.02.2008**

जब खपत अधिक व उत्पादन कम होगा तो कीमतें तो बढ़ेगी ही। वर्तमान में पेट्रोल से चलने वाले वाहनों में बहुत अधिक वृद्धि हो गई है। कोई भी युवा साइकिल का प्रयोग नहीं करना चाहता। यदि हम सप्ताह में एक दिन के लिए भी पेट्रोल वाहन का त्याग कर दें तो पेट्रोल बचत के साथ–साथ वायु प्रदूशण से भी मुक्ति पा सकते हैं।

**79 मोबाइल बनाम नैनो कार** **26.02.2008**

वर्तमान में जिस तरह दूध वाले, सब्जी वाले, काम वाले, यहां तक कि बच्चों के पास भी अपने अलग–अलग मोबाइल है उसी तरह आगामी कुछ ही वर्षों में सस्ती सुंदर नैनो कार भी अपनी अलग–अलग होगी। घड़ी, मोबाइल की तरह यह भी जरूरी वस्तु के रूप में अपनाई जाने लगेगी चाहे इससे प्रदूषण फैलने या पार्किंग की समस्या हो।

**80 पुराणों से सीख** **06.08.2008**

'संदर्भो की प्रासंगिकता' पढ़ा। हमें पुराणों से सीख अवश्य लेनी चाहिए, लेकिन अमल करने के लिए आज की परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना चाहिए। उस युग व इस युग में जमीन–आसमान का अंतर है। उस युग में आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि कोई बुराई नहीं थी। हमें इसी युग के किसी जीवित महापुरूष को ढूंढकर उनके बताए अनुसार मार्ग पर चलकर मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। यह कठिन जरूर है लेकिन असंभव नहीं।

**81 कड़े नियम बनाये जाएँ** **02.02.2009**

हड़ताल के दौरान तो तोड़फोड़ तो होनी ही नहीं चाहिए। इससे कई लोगों को आर्थिक व शारीरिक कष्ट उठाना पड़ता है। लेकिन यह नियम लागू हो जाए कि हड़ताल के दौरान जो भी नुकसान होगा उसके जिम्मेदार आयोजक ही होंगे तथा उस नुकसान की भरपाई उन्हें ही करनी होगी तभी यह अनावश्यक तोड़फोड़ बंद हो सकती है। हड़ताल के दौरान टीवी पर इन लोगों को ज्यादा कवरेज दिया जाता है, जो युवाओं को उकसाने का काम करता है। ऐसी नकारात्मक घटनाओं को बार–बार हाईलाइट करने की क्या आवश्यकता है?

**82 जब जागे तभी सवेरा** **27.04.2009**

'नींद का टूटना' संपादकीय पढ़ा। जब जागे तभी सवेरा। संसार में इतनी सारी बुराइयां है लेकिन जब हमारी नींद टूटी तभी से हमें इन को दूर करने का हल ढूंढना शुरू कर देना चाहिए। आज जब चंद लोगो ने शराब के विरोध में आवाज उठाई तो कल यह एक बड़ा रूप ले लेगी व एक दिन इस बुराई का अंत जनभागीदारी से ही हो जाएगा। इसी तरह हमें समाज में, देश में, परिवार में कई छोटी–छोटी बुराइयां देखने को मिलती है। यदि हम सरकार की जगह स्वयं अपने पैमाने से ही उसे हल करने का प्रयास करें तो वह कभी बड़ा रूप नहीं लेगी जैसे पानी बचाना, बिजली बचाना, वृक्ष काटने से रोकना, दहेज विरोध, यातायात नियमों का पालन आदि समस्याओं का हल छोटे–छोटे ग्रुप बनाकर निकाल सकते हैं, बस जरूरत है जागरूकता की।

**83 वे जनता के सेवक हैं, ये भी समझे** **21.09.2009**

आमतौर पर चुनाव में जीतने या कोई मंत्री पद पा लेने के बाद यह भूल जाते हैं कि वह जनता के सेवक भी है। इसलिए वे जनता का पैसा अनापशनाप तरीके से खर्च ना करें। रहा सवाल नेताओं की फिजूलखर्ची रोकने का, तो इसके उपाय एक–दो नहीं हजारों है लेकिन शर्त यही है कि इन पर मंत्रियों से अमल कौन कराएगा? यह लोकतंत्र के सेवक अपने साथ राजा–महाराजा या बादशाहो जैसा काफिला लेकर चलते हैं। इन काफिलो पर जो खर्च होता है उसे जाहिर है बेचारी आवाम को भुगतना पड़ता है। यह लोग जन्मदिन और शादी–ब्याह में खूब खर्च करते हैं, ऐसे समय पर इन्हें रोकना चाहिए।

**84 राज पिछले जन्म का** **05.02.2010**

हमें तो अतीत की अच्छी व बुरी बातों से सीख लेकर उसे भी भुला देना चाहिए व वर्तमान में ही जीना चाहिए। वर्तमान में जीना ही जीवन जीने की सच्ची कला है। तो फिर अपने पिछले जन्म के बारे में जानने की इतनी उत्सुकता क्यों होती है? बताया जा रहा था कि पिछला जन्म आपका ही है, यह भी निश्चित नहीं है तो क्यों फिर इस अंधविश्वास में विश्वास किया जाए।

**85 थोड़ा और....!** **12.06.2010**

सीबीएसई के रिजल्ट में ग्रेड सिस्टम प्रशंसनीय है। जिस पास–फैल के चक्कर में या प्रतिशत के तनाव में बच्चे परीक्षा के दिनों में जो घबराहट, बैचेनी अनुभव करते थे, उससे उन्हें भी छुटकारा मिलेगा। अब परीक्षा बिना किसी तनाव के संपन्न हो सकेगी। यदि कोई छात्र किसी कारणवश कम अंक या फैल भी हो जाएगा तो कम से कम जिंदगी से हारा हुआ तो महसूस नहीं करेगा! यही सुधार अब बारहवीं की परीक्षा परिणाम में भी लागू होने का इंतजार है। इसी तरह बच्चों के बस्ते का बोझ भी कम हो जाए तो 'सोने पे सुहागा'।

**86 आत्मबल जरूरी, बलि नहीं** **18.06.2010**

दक्षिण अफ्रिका में शुरू हुए फुटबॉल, विश्वकप को निर्विघ्नं संपन्न कराने के लिए गाय की बलि चढ़ाई गई। लेकिन बलि चढ़ाने के बाद भी कार्य निर्विघ्नं संपन्न नहीं हुआ तो क्या उस गाय की जान वापस लौटा देंगे! इस संसार में मानव के पास आत्मबल और योजना बनाने की वह शक्ति है जिसके बल पर वह हर कार्य निर्विघ्नं संपन्न कर सकता है, इसके लिए उसे बलि देने की कोई जरूरत नहीं!

**87 सरासर अन्याय** **05.07.2010**

मरने का अधिकार इनको दिया किसने। अभी व्यक्ति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है वह चाहे जैसा अपनी जिंदगी का फैसला ले सकता है यदि वह आपके पक्ष में नहीं हुआ तो आप उनकी इज्जत के नाम पर हत्या कर देंगे यह तो सरासर अन्याय है प्रेमियों को मिलाने के लिए कुछ सहायता नहीं कर सकते तो कम से कम उन पर जुल्म ढाकर उनकी जिंदगी में विश तो ना घोले।

**88 गरीबों की इज्जत करो** **26.03.2011**

'देह व्यापार पर वार' संपादकीय पढ़ा। भारत जैसे धार्मिक देश में यौनकर्मियों की संख्या पढ़कर बड़ा अचरज हुआ। संसार में बहुत से व्यापार है, जिससे जीवनयापन हो सकता है, लेकिन स्त्रियां देह व्यापार कर पैसा कमाए यह तो समाज व देश के लिए बड़ी शर्म की बात है।

सरकार शुरू में ही कठोर कदम उठा कर देह व्यापार पर रोक लगा देती तो आज संख्या में बढ़ोतरी की नौबत ही नहीं आती। सरकार अभी भी इसे रोकने की बजाए इसमें होने वाले रोगों के रोक पर ध्यान दे रही है। इससे रोक के लिए सबसे पहले तो हमें ही हमारी मानसिकता बदलनी होगी और गरीब स्त्रियों को स्वाभिमान व इज्जत से जीवन जीने के साधन उपलब्ध कराने होंगे।

**89 सोच में परिवर्तन लाएँ** **04.04.2011**

विकृति तो तब ही पैदा होती है जब असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। आज व्यक्ति के व्यवहार में संतुलन कहा है? थोड़ी–सी कुछ बात हुई तो मरने–मारने पर उतारू हो जाता है। तब वह कोई भी रिश्ता नहीं देखता। यह सब पैसे का बोलबाला है। समाज, परिवार व स्कूल में उन युवाओं के व्यवहार व सोच में परिवर्तन हो इसके लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा। इसके लिए हमें योग–प्राणायाम व नैतिक शिक्षा का सहारा लेना पड़ेगा जिससे उनकी सोच बदलेगी।

**90 अब स्थिति खतरनाक** **28.07.2011**

'जेल को जेल ही रहने दो' संपादकीय पढ़ा। अभी तक तो जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार व यातनाओं के कारण मौत के बारे में जानकारी थी लेकिन अब इसका दूसरा पहलू सामने आया है। अमीरों, नेता के लिए जेल अब सर्व–सुविधायुक्त होटल बन गए हैं, जो पहली स्थिति से भी ज्यादा भयावह है। इसमें तो अपराधी को और अधिक शह मिल रही है। शायद तभी देश में इतने घोटाले व अपराधों में बढ़ोतरी हो रही है। इन कैदियों से ज्यादा तो इनको सुविधाएँ उपलब्ध करने वाले दोशी हैं जो अपनी नौकरी व देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं।

**91 मौज–मस्ती के लिए....।।** **08.08.2011**

फिल्म से नोट कमाने का यह अर्थ तो कदापि नहीं लगाना चाहिए कि समाज इसे स्वीकार कर रहा है। शायद युवाओं ने इसे मौज–मस्ती के लिहाज से देखा हो। लेकिन कोई भी स्वस्थ मानसिकता वाला युवा ऐसी भाषा का प्रयोग कदापि नहीं करेगा जिससे उसकी छवि समाज, स्कूल, कॉलेज व परिवार में गलत बने।

**92 ये कैसी रोक?** **24.04.2012**

जब पानी सर से गुजर जाता है, तो सरकार की नींद खुलती है अब तो तंबाकू, गुटखा पाउच का उपयोग करने वालो की संख्या भयावह आंकड़ा पार कर चुकी है। प्रदेश में भी कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही है। अब जाकर सरकार की नींद खुली और सरकार ने इनके उपयोग पर प्रतिबंध लगाया है। लेकिन यह चीजें अभी भी खुले आम बिक रही है। सरकार ने इन पर केसी रोक लगाई हैं?

**93 अनुभवी को भेजे गाँवों में** **12.05.2012**

डॉक्टर ग्रामीण क्षेत्र में स्वैच्छिक भावना से सेवा दें, इसके लिए नौजवान डॉक्टरों की नियुक्ति के बजाय 55–60 पार के अनुभवी डॉक्टरों को गाँव भेजा जाए। इसकी पहली वजह तो यह है कि नौजवान डॉक्टर के पास अनुभव कम होगा। दूसरा यह कि उनका अभी शहर के शोर–गुल भरे वातावरण में मोह नहीं छूटा होता है लेकिन 55–60 पार डॉक्टर स्वयं ही गाँवों का रूख करने के लिए तैयार हो सकते हैं। ऐसे में वे अपने अनुभव से ग्रामीणों को अच्छी सेवाएँ देंगे। वे गाँवों के प्राकृतिक वातावरण में मजबूर होकर नहीं अपितु स्वयं की प्रेरणा से काम करेंगे। इस प्रकार परिणाम भी अच्छे प्राप्त होंगे।

**94 बच्चों को सिखाएं हिम्मत** **06.06.2012**

रिजल्ट का समय बच्चों के लिए बड़ा संवेदनशील समय होता है। हम बच्चों की बचपन से ही ऐसी नींव डालें कि वह कैसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में घबराएं नहीं अपितु डटकर उसका मुकाबला करने की हिम्मत रखें। 'मन का हो जाए तो अच्छा ना हो तो और भी अच्छा' शायद उन्हें नई राह खोजने का अवसर मिलने वाला होगा। हमें अपने बच्चों के मन में कम उम्र से ही प्रेरक गाथाओं से जुड़े सबक बैठा दें ताकि वक आधुनिक तगड़ी प्रतिस्पर्धा का आसानी से मुकाबला कर सके। इस तरह का वातावरण निर्मित कर दे तो वह असंभव कार्य को भी संभव कर दिखाएगा।

**95 स्थिति और भयावह हुई** **09.07.2012**

50 साल पहले स्तंभ में अपराध के तहत रतलाम में तीन वर्षीय बालिका की हत्या का समाचार पढ़ा। इन 50 सालों में स्थिति और भी भयावह हो गई है जबकि हमारे पास तो इन पचास सालों में स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए आधुनिक यंत्र और व्यवस्था है। हर रोज कहीं न कहीं ऐसी घटनाएँ घटित होती ही रहती हैं। इसके निराकरण के लिए सबसे पहले पुरूष की मानसिकता बदलाव जरूरी है नही ंतो सरकार चाहे कितने ही कागजी कानुन बना ले, उम्र कैद या मृत्यु दंड दे दे लेकिन इसके निराकरण के लिए स्वनियंत्रण नैतिकता से बड़ा कोई कानून नहीं चलेगा।

**96 जिसका काम, उसे ही करने दे** **28.07.2012**

'इंटरनेट पर ना खोजें बीमारी का पता' पढ़ा। यह सही है कि इंटरनेट से बीमारी का पता कैसे चलेगा? क्योंकि बहुत सारी बीमारियों के लक्षण आपस में मिलते–जुलते रहते हैं। इस स्थिति में हम बीमारी का पता कैसे लगाएंगे। इस तरह हम रोग का इलाज करने की बजाय दूसरा रोग पालने और कुल मिलाकर स्वास्थ्य पर कुप्रभाव ही पड़ेगा। इसे अपने हाथों से अपना स्वास्थ्य बिगड़ लेना ही कहा जाएगा। जिसका जो काम है यदि वही करे, वही उचित है।

**97 अब सात पीढियो की चिंता** **03.09.2012**

**सूर्यकांत त्रिपाठी** निराला से संबंधित रोचक प्रसंग पढ़ा। निराला जी का व्यक्तित्व निराला था। वह अपने बारे में न सोचकर दूसरों का ख्याल रखने वाले संत से कम नहीं थे, जिन्होंने कल की चिंता कभी नहीं की। इसके विपरीत मौजूदा दौर में देखें तो व्यक्ति परिवार के साथ–साथ सात पीढ़ियों तक की सुरक्षा के बारे में सोचता है। इसके लिए वह अनुचित तरीके आजमाने से भी नहीं हिचकिचाता है। यदि हम बिना परिग्रह वर्तमान में जीने का सोच रखें, तो अपने साथ–साथ देश का भी भला होगा।

**98 कितना फर्क** **25.09.2012**

'हंसते–हंसते सहा अपमान' रोशन रोचक प्रसंग पढ़ा। राजा राममोहन राय कहना आज के संदर्भ में कितना सही है कि मेरा नाम न रहना इतनी बड़ी चीज नहीं है कि उसके लिए कोई अच्छा काम बिगड़ जाए। इससे विपरीत आज सब कुछ नाम के लिए ही किया जा रहा है। कितने ही बगीचों, कालेजों, सड़कों का उद्घाटन नेता करते हैं, उनका नाम शिलालेखों पर अंकित हो जाता है, बस काम हो गया।

**99 अंतिम पत्र** **02.10.2012**

रसोई गैस वितरण की नई नीति के तहत अब अधपकी रोटी व अधकचरी सब्जी का प्रचलन घर–घर में बढ़ जाएगा। ऐसे में किसी भी गृहिणी को इसके लिए डांट नहीं पड़ेगी बल्कि गैस बचत के लिए उठाया गया कदम मानकर इनाम दिया जाएगा।

**100 आज ये तो कल वो** **17.10.2012**

हरियाणा में लड़कियों को दुश्कृत्य से बचाने के लिये बाल विवाह पर जोर दिया जा रहा है। कल को महिला के विधवा होने पर सती प्रथा पर जोर दिया जाएगा। कुरीतियों को फिर से अपनाने के बजाय। समस्या की जड़ को पहचानकर प्रहार करना होगा, ताकि बुराई को खत्म किया जा सके।

**101 साहस करें तो** **18.10.2012**

'प्रसाद ने जब थप्पड़ मारा' रोचक प्रसंग पड़ा। प्रसाद की तरह ही वर्तमान में यदि सभी सहनशील, ईमानदार व्यक्ति बेईमानों के घोटालों, चापलुसियों और पोलों को उजागर करने का साहस करें, तो देश व समाज की काया बदल जाएगी।

**102 शर्मनाक** **08.12.2012**

भारत जैसे देश में भोजन के लिए आदिवासी महिलाओं को नग्न अवस्था में नाचने के लिए मजबूर करना वो भी पुलिसकर्मियों द्वारा रिश्वत लेकर..... यह तो बड़ी शर्म की बात है। पहले तो जिसे जनता की रक्षक माना जाता है वही घर का भेदी बन जाए तो उसकी सजा तो देशद्रोही की होना चाहिए। दूसरी बात विश्व कितनी भी तरक्की कर ले, लेकिन पुरूष की मानसिकता को बदलना किसी के बस की बात नहीं, वह तो अभी भी स्त्री के शरीर पर अटकी है। स्त्री के लिए समानता का अधिकार वाली बात भी यहॉ आकर झूठी प्रतीत होती है।

**103 चिंतन का प्रदूषण** **19.02.2013**

उत्तर प्रदेश के एक मंत्री ने महिला अधिकारी की शारीरिक सुंदरता पर आपत्तिजनक टिप्पणी की है। इससे साफ है कि पुरूष मानसिकता में स्त्री की देह के सिवाय कुछ नहीं तभी महिलाओं की दुर्गति हो रही है। चिंतन के इस प्रदूषण से ऊपर उठकर मानसिक विकास की बात करें।

**104 दिया तले अंधेरा** **22.02.2013**

नरेंद्र मोदी युवाओं को विकास का पाठ पढ़ा रहे हैं, देश की तस्वीर बदलने की बात कर रहे हैं, पर वे अपने राज्य गुजरात में अंधविश्वास को नहीं रोक पा रहे हैं। इसे ही कहते हैं दिया तले अंधेरा। शिक्षा का उजियारा फैलाकर ग्रामीणों को अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

**105 बेखौफ आत्मरक्षा करेंगी।** **27.02.2013**

जयपुर में एक छात्रा ने अगवा करने वालों को लात मारी, चाकू दिखाया और आजाद हो गई। बेशक दसवीं में पढ़ने वाली लड़की ने निडरता के साथ आत्मरक्षा की है। ऐसी घटनाओं से बचने के लिए यदि अभिभावक अपनी बेटियों को प्रशिक्षण दिलाएं तो वे खुद अपनी सुरक्षा कर सकेंगी।

**106 सुरक्षा पर सवाल** **18.03.2013**

दिल्ली की मुख्यमंत्री का यह कहना कि उनकी बेटी भी असुरक्षित महसूस करती है, सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न खड़ा करता है। ऐसे में दूरदराज की महिलाओं की हालात का अंदाजा लगाया जा सकता है।

**107 जल का अपव्यय** **22.03.2013**

एक तरफ गर्मी आने के पहले सरकार पानी बचाने की मुहिम चला रही है, दूसरी और आसाराम बापू भक्तों के साथ पानी को व्यर्थ बहाकर होली मना रहे हैं। उनसे ऐसी अपेक्षा नहीं है।

**108 सिद्धता की चुनौती** **26.03.2013**

किसी महिला का बार–बार पीछा करने व अश्लील इशारे करने को गैर–जमानती अपराध की श्रेणी में रखने का फैसला हुआ। मगर कोई महिला इसे सिद्ध कैसे करें, सरकार इसकी भी जानकारी दे।

**109 कन्या का दान** **30.03.2013**

झाबुआ की अविवाहित आयुशी ने मां को एक किडनी देने का फैसला कर समाज में मिसाल कायम कर दी। उसका यह साहसिक निर्णय सराहनीय हैं। इस कन्या का दान हमेशा याद किया जाएगा।

**110 स्थिति स्पष्ट करें** **02.04.2013**

मुक्केबाज विजेंद्र सिंह पर ड्रग्स लेने का आरोप है। यदि उन्होंने इसका सेवन नहीं किया है तो वह बाल व खून का नमूना देने आगे क्यों नहीं आते? एक जिम्मेदार अंतर्राश्ट्रीय खिलाड़ी को आगे आकर कानून की मदद करना चाहिए।

**111 सजा भुगते संजय** **06.04.2013**

संजय दत्त ने रील लाइफ में मुन्ना भाई बनकर गांधीगिरी के जरिए सबका दिल जीता। इसी तरह रियल लाइफ में भी अपनी गलती स्वीकारते हुए बाकी सजा काटकर गांधीवादी होने का परिचय दें।

**112 रिश्ता तार–तार** **13.04.2013**

"बेटे ने कराई अरबपति भारद्वाज की हत्या", जब बुढ़ापे की लाठी मौत की सौदागार बन जाए तो इस रिश्ते पर भरोसा भी बेमानी हो जाएगा। धन के लालच में बाप–बेटे का रिश्ता तार–तार हो गया।

**113 जनता की करें फिक्र** **19.04.2013**

नैतिक पतन के इस दौर में नेतागण गंभीर समस्याओं से मुंह मोड़ते हुए बेहूदा, बेजा टिप्पणियां करने में लगे हैं। क्या ये नेता कभी चुप रहकर जनता की भलाई के लिए भी कार्य करेंगे?

**114 न्याय की जीत** **30.04.2013**

शिवानी के मुजरिमों को फांसी की सजा सुनाई गई। आखिरकार अपनों और गैरों द्वारा निडरतापूर्वक दिए गए बयानों ने शिवानी को न्याय दिला ही दिया। बदमाश कितने ही शातिर क्यों न हो कानून के लंबे हाथ से कदापि नहीं बच सकते।

**115 बेजा अंधानुकरण** **06.05.2013**

प्रदेश में लिव इन रिलेशनशिप को मंजूरी देने की बात की जा रही है। पाश्चात्य संस्कृति के इस अंधानुकरण के खासकर लड़कियों के लिए दुखदायी परिणाम होंगे। यौन अपराध बढ़ जाएंगे। इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा?

**116 काफी नहीं आक्रोश** **09.05.2013**

महिलाओं की स्थिति पर रेणुका चौधरी का आक्रोश सही है, लेकिन महज गुस्सा कितना न्याय दिलाएगा? जब तक प्रत्येक पुरूष जिम्मेदार नागरिक बन महिलाओं व बच्चों के लिए सुरक्षित माहौल नही बनाता, नए कानून किताबी ही बने रहेंगे।

**117 भांजे ने किया बेपटरी** **15.05.2013**

महाभारत में तो कुटनीतिज्ञ शकुनि मामा ने भांजे को अनीति का पाठ पढ़ाया था, किंतु कलियुग में भांजे ने मामा की नाक के नीचे भ्रष्टाचार के झंडे गाड़कर उनकी रेल पटरी से उतार दी।

**118 जवाबदेही निभाएं** **24.05.2013**

बीसीसीआई अध्यक्ष कहते है कि सट्टेबाजी रोकना हमारा काम नहीं। जब सरकार क्रिकेटरों को बड़े–बड़ें पुरूस्कार देती है, नौकरी देती है, बीसीसीआई को राष्ट्रीय खेल संगठन बनाती है, तो यह देश के प्रति जवाबदेह क्यों नहीं?

**119 कैसे रूके उत्पीड़न** **29.05.2013**

आईटी कंपनी आईगेट ने यौन उत्पीड़न के आरोपी सीईओं को बर्खास्त कर दिया। क्या यही आरोपी की सजा है? कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकना है तो हकीकत सबके सामने लाई जाए और आरोपी को सलाखों के पीछे भेजें।

**120 लाजवाब ओबामा** **05.06.2013**

ओबामा ने कॉलर पर लिपस्टिक का राज सबके सामने उजागर किया। पति–पत्नी के रिश्ते की अहमियत और पारदर्शिता कोई ओबामा से सिखे। टकराव से पहले स्पष्टीकरण देना दिल में जगह बनाने का विशेष गुण है।

**121 असली हीरों** **10.07.2013**

उत्तराखंण्ड में प्रशासन की नकामी, सेना के हेलिकाप्टर के दुर्घटना के बाद भी जवान बचाव कार्य में जुटे रहे। जवानों ने बिना शोहरत की अपेक्षा के बलिदान, समर्पण की इबारत लिखी है। वे ही हमारे देश के 'असली हीरो' है।

**122 उपेक्षा का नतीजा** **03.07.2013**

नासा ने 25 दिन पहले तबाही के संकेत दे दिए थे। मौसम विभाग ने भी चेतावनी दी थी। पर हम नहीं चेते। कोई भी इतना दृढ़निश्चयी, साहसी, जागरूक नहीं रहा, जो समय रहते यात्रियों को रोक सकता। नही ंतो त्रासदी इनती भीषण नहीं होती।

**123 नाकाम प्रशासन** **12.07.2013**

खुफिया जानकारी के बावजूद बोध गया के महाबोधि मंदिर पर हमला स्थनीय सुरक्षा– प्रशासन की नाकामी उजागर करता है। राजनीतिक दलों ने इस हमले को भी सियासी रंगत देने में कसर नहीं छोड़ी, जो निंदनीय है।

**124 प्री पॉलिटिक्स क्लास** **17.07.2013**

राजनीति में जाने के इच्छुक लोगों के लिए पीपीसी यानी प्री पॉलिटिक्स क्लॉस हो, जिसमें एक दूसरे की टांग खींचने, किसी भी आपदा को सियासी रंग देने की ट्रेनिंग दी जाए। जो इसमें महारथ हासिल करेगा, उसकी नेतागिरी अच्छी चलेगी।

**125 जिंदगी से खिलवाड़** **20.07.2013**

बिहार में मीड–डे मील से बच्चों की मौत हदयविदारक घटना है। यह सरकारी तंत्र में पसरे भ्रष्टाचार व घोर लापरवाही का नमूना है। किसी ने भी बच्चों की जिंदगी का मोल समझते हुए ठोस कदम उठाए होते, तो यह हादसा नहीं होता।

**126 उचित नसीहत** **25.07.2013**

राहुल गांधी ने अपनी पार्टी के नेताओं को बयानबाजी में संयम रखने की उचित नसीहत दी है। नेता कई बार अपने बयानों में सांप्रदायिक सद्भाव का भी ख्याल नहीं रखते, जिससे कड़वाहट पैदा होती है। यह सलाह सही हस्तक्षेप है।

**127 अनूठा दण्ड** **27.07.2013**

स्लीवलेस पहनी तो लिखना पड़ा निबंध। पेनल्टी की जगह इस विचित्र सजा ने लडकियों से मनवा दिया कि संस्थान में शालीन पोशाक पहनना ही उचित है। वाकई यह गांधीगिरी कमाल की है।

**128 न घसीटें राजनीति में** **31.07.2013**

अमर्त्य सेन व जगदीश भगवंती की देश के विकास मॉडल पर बहस को राजनीति में न घसीटें। इस बौद्धिक बहस से नेताओं की सनसनीखेज सुर्खियां निकालने की कोशिश संदर्भ से भटकाना ही है। जहां विकास की बात हो, वहां तो नेता चुप बैठें।

**129 यह कैसा प्यार ?** **05.08.2013**

इन दिनों प्यार में अंधे युवा बलपूर्वक प्रेम हासिल करने में तुले है। नाकाम होने पर तेजाब फेकने, हत्या, बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम दे रहे है। प्यार की जंग जीतने के लिए जीवन में संयम, धैर्य, सहनशीलता को अपनाएं।

**130 दुर्गा को सलाम** **08.08.2013**

दुर्गा शक्ति ने उत्साह के साथ अपना कर्त्तव्य निभाया और देश की सच्ची सेवा की। निलंबन की चिंता छोड़ भ्रष्टाचार के मौन समर्थन व सहयोग को नकारा। इस ईमानदार अधिकारी को उचित संरक्षण मिलना ही चाहिए।

**131 सेना को दे छूट** **09.08.2013**

हमारे पांच जवानों को धोखे से मारने वाले पाकिस्तान को सबक सिखाने के बजाय नेता अलग ही सियासत में उलझे पड़े। सरकार को अब बहाने ढूंढ़ने के बजाय मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए। नही ंतो सेना को ही खुली छूट दें दे।

**132 संसद में चर्चा करें** **20.08.2013**

संसद का मानसून सत्र भी ज्यादातर हंगामे की भेंट चढ़ रहा है। सरकार के गलत कामों का विरोध विपक्ष की जिम्मेदारी है, पर हंगामा न हों, यह दोनों पक्षों का दायित्व है। संसद की बैठक कामकाज पर चर्चा के लिए होती है, हंगामें के लिए नहीं।

**133 निर्दोशों की बलि** **24.08.2013**

सीरिया में राष्ट्रपति के सामर्थको व विद्रोहियो के घमासान का खामियाजा निर्दोश जनता भुगत रही है। हाल ही में वहां 1300 मासूम मारे गए। नर्व गैस को नरसंहार का हथियार घोषित कर इसके उत्पादन पर प्रतिबंध लगाएं।

**134 सटीक पैगाम** **27.08.2013**

भारत द्वारा चीन की सरहद पर हरक्यूलिस विमान उतारने से जहां हमारी सेना का मनोबल बढ़ा है, वही चीन को भी सटीक संदेश मिल गया है। इसी तरह अब पाकिस्तान की दोहरी नीति को भी शिकस्त देने का समय आ गया है।

**135 बेतुकी बहस** **30.08.2013**

मुंबई गैंगरेप प्रकरण के बाद यह बहस शुरू हो गई है कि दिल्ली और मुम्बई में से कहा महिलाएं ज्यादा असुरक्षित है। सवाल तो उनको हर जगह सुरक्षित माहौल देने का है। ऐसी बहस का कोई तुक नहीं। इससे समाधान नहीं मिलेगा।

**136 यह कैसी सजा** **04.09.2013**

निर्भया के नाबालिग आरोपी को यह कैसी सजा। परिवार के साथ वक्त बिताएगा, टीवी देखेगा। यानी सजा नहीं सुविधाएं मिली। सिर्फ तीन साल की सजा, वो भी सुधार गृह मे। किशोर अपराधियों के संदर्भ में कानून बदलने की जरूरत है।

**137 कुटिया या कोठी ?** **11.09.2013**

एक खबर के मुताबिक आसाराम की 'कुटिया' में स्वीमिंग पूल भी मिला है। इस युग में कुटिया का भी नवीनीकरण हो गया है। इन्हें कुटिया नहीं, सर्वसुविधायुक्त कोठी कहना ज्यादा सही होगा। संत भी संयम–साधना छोड़कर भौतिक साधनों के उपभोग में लिप्त हो गए है।

**138 न फैले अशांति** **13.09.2013**

मुजफ्फरपुर में यदि प्रशासन समय रहते सजग हो जाता तो दंगों की आग इतनी नहीं फैलती। सुरक्षा बलों की चौकसी व खुफिया तंत्र की काबिलियत अहम पहलू है। समाज में अशांति कई तरह के खतरों को जन्म देती है। प्रशासन सजग रहें।

**139 बच्चों से खिलवाड़** **21.09.2013**

कोलकाता के खाटुल गांव में गलत दवा दिए जाने से बच्चों के बिमार होने की खबर पढ़ी कैसी सरकारी योजनाऍ है जिसमे ंकिसी मिड–डे मील तो कभी दवाई खाकर बच्चें बिमार पड़ रहे है ? बच्चों कि जिन्दगी से ऐसा खिलवाड़ न हों। योजनाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही बर्दाश्त नहीं।

**140 बढ़ता आतंकवाद** **25.09.2013**

एक ओर हम दुनिया को शांति व सद्भाव का संदेश देने वाली स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती मना रहे है, वहीं विश्व में आतंकवाद गहरा रहा है। नैरोबी, पाक, सीरिया की घटनाऍ इसकी गवाह है। आत्मिक विकास की ओर कदम बढ़ाने से ही संसार में पुनः अमन–चैन कायम होगा।

**141 प्रतिष्ठा को आघात** **28.09.2013**

भारतीय सेना की प्रतिष्ठा सियासत से दूर रहते हुए देश सेवा करने वाले बल के रूप में हैं। सेना की पारदर्शी छवि पर सबको भरोसा है । पर पूर्व जनरल वी.के.सिंह की बातो ने इसे भी कठघरें में खड़ा कर दिया। अब संकीर्ण व निष्पक्ष जांच से ही सच उजागर होगा।

**142 संतुलित केमिस्ट्री** **01.10.2013**

नरेन्द्र मोदी गठबंधन अंकगणित से बनना और केमिस्ट्री से चलना बताते हैं। इस केमिस्ट्री में समीकरण के दोनों पक्ष संतुलित करने के लिए उन्हें विरोधियों की आलोचना करने और खामियां गिनाने के साथ–साथ अपने सपनों के भारत की स्पष्ट तस्वीर भी पेश करना पड़ेगी।

**143 अहिंसा बनाम आंतक** **04.10.2013**

जहां 2 अक्टूबर को गांधी जयंती हम 'अंहिंसा दिवस' के रूप में मनाते हैं, वही इस पावन दिवस की पूर्व संध्या पर खण्डवा की जेल से सिमी के 6 आंतकी फरार हो गए। इन हालात में हम अंहिसा का राज कैसे कायम करें ?

**144 मोदी ने सही कहा** **09.10.2013**

नरेन्द्र मोदी के देवालय से पहले शौचालय संबंधी बयान का स्वागत किया जाना चाहिए। वर्तमान में खासकर ग्रामीण महिलाओं की सुरक्षा व विकास के प्रतीक के रूप शौचालय निर्माण का महत्व है। घर–घर में शौचालय जरूर हों।

**145 लपेटे में परिवार** **14.10.2013**

आसाराम और उनके बड़ें बेटे नारायण साँई के बाद अब उनकी पत्नी व बेटी भी आरोपों के घेरे में है। जाहिर है कि पाप का घड़ा फूट चुका है और सारी बुराईयां खुलकर बाहर आ रही है। यदि घरवाले पहले ही उन्हें बुराई के रास्ते पर जाने से रोक देते तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता।

**146 अब दिखावे से क्या ?** **18.10.2013**

जब हम फेलिन जैसी प्राकृतिक आपदा से सजग रहकर निपट सकते है, तो रतनगढ़ में पूर्व–नियोजित कार्यक्रम के लिए पुख्ता सुरक्षा इंतजाम क्यों नहीं कर सके ? अब महज दिखावे के निलबंन व सियासी भागदौड़ से क्या हासिल होगा ? शासन की लापरवाही अक्षम्य है।

**147 रस्सी जल गई पर** **24.10.2013**

सड़क के रास्ते जोधपुर ले जाए जाने पर आसाराम ने कहा कि पुलिस धोखा कर रही है और प्लेन के बजाय वैन से ले जा रही है। इसे कहते हैं कि रस्सी जल गई, बल नहीं गया। आसाराम खुद को संत कहते है, पर विलासितापूर्ण सांधनों का मोह अभी भी छूटा नहीं है।

**148 देर से न्याय** **26.10.2013**

सुप्रीम कोर्ट का फैसला डॉ. साहा की पत्नी की मौत के 15 साल बाद आया। इतने वर्षो में उन लापरवाह डॉक्टरों ने न जाने कितनी जिंदगियों से खिलवाड़ किया होगा ? मुआवजे से जिंदगी नहीं लौटाई जा सकती। पर इस फैसले ने मूल्यहीनता के अंधेरे में आशा का प्रकाश जरूर बिखेरा।

**149 दिग्भ्रमित युवा** **31.10.2013**

पटना विस्फोट में छात्रों का इस्तेमाल किया जाना दुखद है। चंद पैसों की खातिर युवा अपना ईमान बेचने लगें, तो देश के लिए यह खतरे की घण्टी है। युवा ही हमारे सबसे ताकतवर संसाधन है, जो बदलाव लाने का मांदा रखते है। यदि ये गलत दिशा में जाएगें तो देश संकट में पड़ जाएगा।

**150 संकीर्ण सियासत** **09.11.2013**

सरदार पटेल की विरासत पर सियासत आखिर क्यों हो रही है ? हमारे कर्णधारों को अतीत के घटनाक्रम या महान शख्सियतों पर सियासत के बजाय देश को उन्नत बनाने वाले विचारों पर बात करना चाहिए। तब हालात अलग थे और आज हालात अलग है।

**151 इतिहास और विकास** **12.11.2013**

दिग्गज नेता देश का इतिहास, भूगोल बदलने के आरोप–प्रत्यारोप में उलझे है। पर आज का युवा विकास की इबारत लिख नया इतिहास रचना चाहता है। इतिहास के पन्ने पलटने से देश की उन्नति नहीं होगी। विकास के दावे करने वाले नेता इस तथ्य पर भी ध्यान दें।

**152 प्रताड़ना के विरूद्ध** **14.11.2013**

महानगरों में घरेलु नौकर/नौकरियों को शारीरिक, मानसिक रूप से प्रताड़ित करने की घटनाएं बढ़ रही है। धनी व शिक्षित लोगों द्वारा ऐसा बर्ताव बेहद दुःखद है। इनकी स्थिति में सुधार के लिए विदेशों की तरह भारत में भी आर्थिक मुआवजे का निर्धारण किया जाना चाहिए।

**153 अब खुद कठघरे में** **18.11.2013**

सुप्रीम कोर्ट के एक सेवानिवृत जज पर एक महिला इंटर्न ने यौन–उत्पीड़न का आरोप लगाया है। इससे अदालत में गीता पर हाथ रख दूसरों से सच बोलने की सौगंध खिलवाने वाले के समक्ष खुद ऐसी नौबत आ गई है। कोर्ट से निश्पक्ष कार्रवाई की उम्मीद है। पीड़िता को न्याय मिले।

**154 न्याय की खातिर** **21.11.2013**

‘न्याय की अग्निपरीक्षा’ संपादकीय पढ़ा। पीड़ित इंटर्न को सलाम, जिसने शेर के मुंह में हाथ डालने का साहस दिखाया। बची तीनों लड़कियों को भी उसका साथ देना चाहिए। रसूखदार का जुर्म सिद्ध होने से ही हर महिला कानून के निश्पक्ष न्याय पर भरोसा करेगीं।

**155 वोट से जवाब** **25.11.2013**

छततीसगढ़ में भारी मतदान कर लोगों ने नक्सलियों को करारा जवाब दिया। आम लोग वोट की ताकत में अपना भविष्य देखते है। हम राजनीतिक अधिकारों के उपयोग से समाज को भी सुधार सकते है।

**156 पीड़िता के पक्ष में** **27.11.2013**

सुप्रीम कोर्ट में महिला इंटर्न और तहलका की पत्रकार के मामलों से लगता है कि महिलाओं पर ज्यादती के खिलाफ परिवार व समाज की आवाज भी शामिल हो रही है। अब पीड़िता पर उंगली नहीं उठाई जाती, चुप रहने के लिए नहीं कहा जाता। यह बदलाव सकारात्मक है।

**157 तेजपाल के हथकंडे** **29.11.2013**

तरूण तेजपाल ने अपनी गलती मान ली और खुद को छह महिनें के लिए काम से अलग कर लिया। यानी अपराध खुद जज भी बन गया। पर इससे पीड़िता को न्याय नहीं मिला। तरूण कितनी भी तिकड़में कर लें, उनके दाग धुलने वाले नहीं है। उन्हें न्याय के कठघरें में आना ही होगा।

**158 पिता को भी दण्ड मिलें** **04.12.2013**

इन्दौर में लाखों रूपये देकर मेरिट होल्डर बने तीन डॉक्टरों को गिरफतार किया गया। इनसे पहले तो इनके पिता दोषी है, जो अपने बच्चो का (झूठा) भविष्य संवारने के चक्कर में इस फर्जीवाड़े का हिस्सा बने। बेटों के साथ उनके पिता को भी दंण्डित किया जाना चाहिए।

**159 आप का कमाल** **12.12.2013**

दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने दिखा दिया कि चुनाव जीतने के लिए धनबल और बाहुबल जरूरी नहीं है। अपनी बेदाग छवि से उम्मीदवार अकेला ही मैदान मार सकता है। 'आप' को इसी तरह अपने आदर्शो पर कायम रहना चाहिए।

**160 तार्किक समाधान** **14.12.2013**

समलैंगिता पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले से कई लोग निराश है। माना कि पहले सरकार अलोकप्रिय फैसलों के लिए कोर्ट की आड़ लेती रही है, पर यदि कोर्ट भी संसद पर मामला टालने लगे तो भ्रमक स्थिति निर्मित हो जाएगी। इसका कोई तार्किक समाधान निकालना होगा।

**161 अंतिम पत्र** **16.12.2013**

अभी तक तो हमने चोर की दाढ़ी में तिनका होने की बात ही सुनी थी, पर आज के इस कलियुग में तो संत, जज और पत्रकार जैसे प्रतिष्ठित शख्सियतों की दाढ़ी में भी तिनके निकलने लगे है।

**162 गरिमा को आघात** **20.12.2013**

जस्टिस गांगुली पर आरोप लगने के बाद उनसे ज्यादा तो उस संस्था की गरिमा को आघात लगा है, जिसके प्रमुख पद पर वे आसीन है। यौन उत्पीड़न का आरोपी ही मानवाधिकारों के मुद्दे पर निर्णन दें, यह कहां तक उचित हैं? उन्हें तुरन्त इस्तीफा देना चाहिए।

**163 अजब संयोग** **03.01.2014**

आम आदमी पार्टी के साथ '28' अंक का अजब संयोग जुड़ा है। इस पार्टी ने दिल्ली में 28 सींटे जीती। इसके मंत्रिमण्डल ने 28 दिसम्बर को शपथ ली। इसके अलावा इसे समर्थन दे रही पार्टी कांग्रेस की स्थापना भी 128 साल पहले 28 दिसम्बर को हुई थी।

**164 अच्छा संकेत** **04.01.2014**

अरविंद केजरीवाल राजनीति के क्षितिज पर ईमानदारी का प्रतीक बनकर उभरे हैं। चार दिन में ही दिल्ली में बिजली दरें आधी और महीने में 20000 लीटर पानी। मंत्री पद की सुविधाओं को नकारकर आम आदमी की रोटी, पानी, घर की चिंता करना बहुत ही अच्छा संकेत है।

**165 मुद्दा है सादगी** **07.01.2014**

केजरीवाल के बड़ें आवास का विरोध हुआ, किन्तु दूसरे मुख्यमंत्रियों की सुविधाओं पर किसी का ध्यान नहीं है। ऐसा इसलिए क्योंकि 'आप' ने शुचिता व सादगी के मुद्दे पर भावानात्मक माहौल बनाया। उसे आगे भी ऐसी दिक्कतें झेलना होगी।

**166 दिखाई समझदारी** **10.01.2014**

अच्छा हुआ कि मुख्यमंत्री को अड़तालीस घंटे बाद अपने दिल की आवाज सुनाई दे गई और उन्होंने शराब विक्रय संबंधी अपने विवादित निर्णय को वापस ले लिया। वरना सरकार के साथ–साथ उनकी साख को भी बट्टा लगता।

**167 बेवजह का राग** **13.01.2014**

''आप का जनतंत्र''। संपादकीय पढ़ा सरकार बनाते समय तो जनमत संग्रह की बात समझ में आई, पर हर बार इसका राग अलापना उचित नहीं कहा जा सकता। इससे निर्वाचित सरकार की निर्णयशीलता पर प्रश्नचिन्ह लगता है। देश में संवैधानिक व्यवस्था के मुताबिक ही चलना पड़ता है।

**168 पर्यावरण का मसला** **15.01.2014**

नरेन्द्र मोदी ने जिस तरह 'जयंती टैक्स' की बात की, उस पर विवाद स्वाभाविक है। पर हमें यह भी समझना होगा कि विकास परियोजनाओं को गति देने के चक्कर में पर्यावरण की अनदेखी न हो। यह गंभीर मुद्दा है। राजनीतिकि बयानबाजी के जरिए इसके हल्के स्तर पर न टाले।

**169 गलती और हेकड़ी** **17.01.2014**

कैसी संवेदनशीलता। संपादकीय पढ़ा। अखिलेश यादव अपनी सरकार की गलतियां उजागर होने पर मीडिया से खफा हुए, जबकि मीडिया तो सिर्फ अपना काम कर रहा है। इसे कहते है 'उल्टा चोर कोतवाल को डाटे।'

**170 ये पिता–पुत्र** **21.01.2014**

एक ओर आध्यात्मिक जगत की एक पिता–पुत्र की जोड़ी अपने कुकर्मो के कारण जेल की सलाखों के पीछे है, वहीं राजीनीतिक जगत के एक पिता–पुत्र असमाजवादी कार्य कर आगामी लोकसभा चुनाव में अपने कर्मो का परिणाम भुगतने की तैयारी कर रहे है।

**171 दें सार्वजनिक सजा** **28.01.2014**

बीरभूम के बर्बर प्रकरण के बारे में जानकर दिल दहल गया। जिस गांव के मुखिया की ऐसी निकृश्ट सोच हो, वहां के लोगों की जीवनशैली तो पशुओं से भी बदतर होगी ही। दुष्कर्मियों के साथ ही गांव के मुखिया को भी सार्वजनिक तौर पर सजा दी जाए।

**172 सबकी जिम्मेदारी** **31.01.2014**

आशा मिर्गे की यह बात मान भी लें कि लड़कियों पर जुर्म के लिए तीन चीजें कपड़ें, बर्ताव और अनुचित स्थान पर जाना जिम्मेदार है, तब भी 'निर्भया' पर दिया उनका बयान विवादित ही है। क्या दिन में लड़कियां सुरिक्षत है? लड़कियों को सुरक्षा देना सबकी जिम्मेदारी है।

**173 सतही प्रलोभन** **04.02.2014**

विकास के अहम मुद्दों को छोड़कर सस्ती बिजली, सस्ते अनाज, टोल फ्री मार्ग जैसे मुद्दों पर वोट मांगे जा रहे है। जनता को भी यह सतही प्रलोभन पसंद आ रहे है, पर दूरगामी प्रभाव तो अर्थव्यवस्था पर ही पड़ेगा। हम इनोवेशन व तकनीकी विकास के जरिए अपनी आर्थिक क्षमता बढ़ाएं।

**174 स्वस्थ संस्कृति** **07.02.2014**

पन्द्रहवी लोकसभा सबसे खराब रिकॉर्ड के साथ कार्यकाल पूर्ण कर रही है। हमारे जनप्रतिनिधि संसद में बस हंगामा, स्थगन, वॉकआउट में रूचि लेते रहे । लोगों के मोहभंग से पहले अगली लोकसभा के लिए स्वस्थ राजनीतिक संस्कृति का विकास करें।

**175 दस साल बाद क्यों ?** **11.02.2014**

अमित्ताभ बच्चन कहते है कि उन्होने एक बच्ची के कहने पर सॉफट ड्रिंक का विज्ञापन बंद कर दिया। सवाल यह है कि उन्होंने दस साल बाद इसका जिक्र क्यों किया, वह भी पूरे पैसे मिलने के बाद? वे पहले ही बता सकते थे। पैसे का पलड़ा यहां भी भारी रहा।

**176 खेल का भला नहीं** **12.02.2014**

बीसीसीआई अंर्तराष्ट्रीय क्रिकेट की बॉस बन गई। लेकिन क्या इससे खेल का भला होगा? भारत अपनी जमीन पर धन की खातिर ज्यादा मैच खेलेगा। लेकिन ऐसे में विदेशी जमीन पर दयनीय प्रदर्शन को देखते हुए हमारे खिलाड़ियों की क्षमता का विकास कैसे होगा ?

**177 अंतिम पत्र** **15.02.2014**

अभी तक तो हमारे नेता एक–दूसरे की गलतियों को 'नमक–मिर्च' लगाकर जनता के सामने परोसते थे। पर गुरूवार को तो एक सासंद ने 'काली मिर्च का तड़का' भी लगा दिया। यह घोर निंदनीय है।

**178 जनता के सेवक** **18.02.2014**

अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में 49 दिनों के अथक प्रयास से सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार की जितनी सफाई हो सकी कर दी। इतने कम समय में यह सब कर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वे षडयंत्रबाज, घोटालेबाज नहीं, जनता के सच्चे सेवक है और आगे भी रहेंगे।

**179 कैसे भला होगा ?** **20.02.2014**

कहते है कि अंत भला तो सब भला। लेकिन कांग्रेस के राज में तो कॉमनवेल्थ, 2जी, कैश फॉर वोट, कोल ब्लाक आंवटन घोटाले के बाद मिर्ची स्प्रे कांड और अब चौरी छिपे तेलंगाना बिल पास कराने के रूप में एक और बुराई जुड़ गई। ऐसे में कांग्रेस का भला कैसे होगा ?

**180 रहम की राजनीति** **22.02.2014**

तमिलनाडु की जयललिता सरकार ने राजीव गांधी के हत्यारों की रिहाई का फैसला सियासी स्वार्थ के चलते लिया था, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने उचित ही रोक लगाई। हत्यारों पर कैसा रहम। क्षेत्रीय वोट बैंक की यह राजनीति राष्ट्रीय अस्मिता पर चोट है। यह सरासर निंदनीय है।

**181 संसद में सद्‌भाव** **25.02.2014**

पंद्रहवी लोकसभा के आखिरी सत्र के अंतिम दिन सांसदों ने जैसी सहदयता दिखाई, वैसा महौल यदि अगली लोकसभा के शुरूआत से ही कायम रखे तो कितना अच्छा हो। संसद में कटुता फैलाने के बजाय सभी विधेयको व मुद्‌दों पर सार्थक बहस करें।

**182 हो ईमानदार सर्वे** **01.03.2014**

चुनाव पूर्व ओपिनियन पोल प्रतिबंधित करने के लिए कई दल मांग कर रहे है। स्टिंग ऑपरेशन से पता चला है कि पैसों की खातिर आंकड़ों में कैसे हेरफेर किया जाता है। इससे सर्वे की साख गिरी है। सर्वे प्रतिबंधित करने की बजाय इनकी प्रतिक्रिया पारदर्शी बनाए। संदिग्ध तरीको को रोकें।

**183 कई छेंदो के बावजूद** **05.03.2014**

नाव के पेंदे में एक भी छेद इसे डुबाने को काफी होता है। फिर 'सिंधुरत्न' में तो उम्र पूरी कर चुकी बैटरियां, रिटायरमेन्ट की अवधि जैसे कई छेद थे। रक्षामंत्री ने फिर भी इसे तैराते हुए हमारे जांबाज अफसरों की जिंदगी को पानी में डुबो दिया। इस्तीफा रक्षामंत्री को देना चाहिए था।

**184 नहीं बदले हालात** **08.03.2014**

पचास साल पहले छपी खबर के मुताबिक धार के एकलदूणा ग्राम में गढ़डे में दबी एक माह की बालिका जिंदा निकली थी। खेद है कि इतने वर्षो से महिला दिवस मनाने के बावजूद आज भी हालात कमोबेश वहीं है। आज भी हमारी बेटियां सुरक्षित नहीं। समाज उनके प्रति सोच में बदलाव लाते हुए उन्हें सुरक्षित माहौल मुहैया कराए।

**185 महज जुमलेबाजी** **12.03.2014**

वर्तमान नेता आमजन और उनसे जुड़ें मुद्दों से कोसो दूर है। यही वजह है कि वे जनता की नजरो में चढ़ने के लिए बेसिलपैर की जुमलेबाजी और विरोधियों पर तल्ख भाषा का प्रयोग कर रहे है। इसका इलाज संबंधित दल के नेतृत्व को तुरंत करना चाहिए तभी सुधार संभव है।

**186 जुर्म रोकने के लिए** **14.03.2014**

इन्दौर पुलिस का कहना है कि 75 फिसदी से ज्यादा अपराधी शराब अहातों से निकलते है। राजस्व बढ़ाने के चक्कर में यदि शराब बिक्री पर रोक नहीं लगाना चाहती तो कम से कम वारदात का प्रारूप बनाने के लिए अहातों की सुविधा तो न दें। इन अहातों पर तो लगाम लगाए।

**187 संभल गए अण्णा** **23.03.2014**

अच्छा हुआ जो अन्ना हजारे ने जल्द ही तृणमूल के कांग्रेस के चुनाव प्रसार से किनारा कर लिया। राजनीतिक उत्थान के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले यदि राजनीतिक प्रचार में शामिल हो जाए, तो उनका हर कदम, विचार, आंदोलन राजनीतिक ही माना जाता है।

**188 ऑनलाईन वोट** **05.04.2014**

आज के दौर में जब चुनाव प्रचार में सोशल मीडिया का जमकर इस्तेमाल हो सकता है तो हमारे सैनिक व दूसरी जगह कार्यरत कर्मचारी इंटरनेट, ईमेल के जरिए मतदान क्यों नही कर सकते ? इससे मतदान का प्रतिशत भी बढ़ेगा। उन्हें भी अपने कार्यस्थल से वोट डालने का अवसर मिले।

**189 किताबों से बवाल** **19.04.2014**

चुनावी दौर में संजय बारू व पीसी पारख किताब लेकर आए है, जिनके मुताबिक मनमोहन सिंह स्वविवेक से निर्णय लेने की स्थिति में नही थे। यदि ऐसा है तो वाकई यह पीएम पद की गरिमा के अनुकूल नहीं है। पर किसी एक व्यक्ति के हाथ मे सारे अधिकार होना भी तो ठीक नहीं।

**190 ये कैसा राजनेता ?** **07.06.2014**

दुश्कर्म की बढ़ती वारदातों पर अंतरराश्ट्रीय क्षोभ के बावजूद सपा नेताओं की सोच पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जब राजनेता ही ऐसी समझ रखते हों, तो दूसरों से क्या उम्मीद की जा सकती है? ऐसे राजनेता समस्या को हल करने की बजाय यथास्थिति को मजबूत करते नजर आ रहे है। इससे देश की छवि दुनिया में खराब हो रही है। हमें जागरूक होना होगा।

**191 केन्द्र से ही उम्मीद** **21.06.2014**

यूपी में कानून व्यवस्था इस कदर बदहाल है कि यहां दुष्कर्म और हत्या की छह घटनाएं मात्र 10 दिन में घटी है। यूपी सरकार के नेताओं की सोच भी तो विकृत लगती है। जब नेता ही ऐसे हों, तो जनता कैसे सुखी रहेगी। दुष्कर्म के खिलाफ कड़ें प्रावधान के बावजूद महिलाएं असुरक्षित है। अब तो केन्द्र से ही कोई उम्मीद बंधती है।

**192 शर्मनाक बयान** **26.07.2014**

एक राज्यपाल का यह बयान कि दुष्कर्म की घटनाओं को भगवान भी नहीं रोक सकते, बेहद शर्मनाक है। लगता है वे दुष्कर्म को भी स्वभाविक प्रक्रिया बताने पर आमांदा है। उच्च पदों पर आसीन लोगों के गैरजिम्मेदाराना बयान बढ़ते जा रहे है। इनका इलाज तो भगवान भी नहीं कर सकते । ऐसे बयान देने वालों का भी दोष कम नहीं।

**193 विज्ञापन के संयोजन से** **02.08.2014**

प्रधानमंत्री ने आईसीएआर के समारोह में 'लैब टु लैंड' का आहान कर देश की दुखती रग पर हाथ रख दिया। ग्रामीण किसानों के विकास में यह खामी एक बड़ा रोड़ा है। त्रस्त गांवों के विकास की गाड़ी विज्ञान के पहियों के सहारे ही आगे बढ़ सकती है। आधुनिक तकनीकों के संयोजन से ही गांव आत्मनिर्भर बनेंगे।

**194 उत्साहजनक संबंध** **06.09.2014**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जापान यात्रा से अनेक उम्मीदें जगी। प्रधानमंत्रीजी ने वहां 3डी के जरिए भारत की ताकत बताई, जो हमारी वास्तविक शक्ति है। जापान ने भी 34 अरब डॉलर के निवेश का भरोसा जता उत्साहजनक प्रतिक्रिया दी। जापानी धन एवं विशेषज्ञता को जोड़ने का पुल मोदी ने तैयार कर दिया।

**195 रसूखदारों की हेकड़ी** **20.09.2014**

कितने शर्म की बात है कि पूर्व मंत्रियों से बंगले खाली कराने के लिए बिजली–पानी के कनेक्शन काटने पड़े। जो सभ्य लोगों की भाषा नहीं समझें, उनके साथ कानून के मुताबिक सख्ती होनी भी चाहिए। बेहतर तो यह होता कि चुनाव हारने पर खुद ही बंगला खाली कर देते। इस तरह की हेकड़ी दिखा वे दूसरों को भी गलत काम के लिए प्रेरित करते है।

**196 राष्ट्रीय गौरव का पल** **27.09.2014**

इसरो द्वारा पहली ही कोशिश मे ही 'मंगलयान' को मंगल की कक्षा में स्थापित करना निश्चित ही राष्ट्रीय गौरव का विषय है। इस अभियान में धन बर्बाद नहीं हुआ अपितु ज्ञान–विज्ञान की दिशा में किए गए प्रयास से दीर्घकालीन लाभ प्राप्त हुआ। विज्ञानियों ने जिस कुशलता के साथ इस अभियान को संचालित किया, उसका मनोवैज्ञानिक लाभ अमूल्य है।

**197 सफल रही यात्रा** **04.10.2014**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा से भले ही कई, समस्याओं का समाधान नहीं निकला, लेकिन सरकार की विदेश नीति स्पष्ट रूप से दुनिया के सामने आ गई। द्विपक्षीय कारोबार के संबंध मे भी आशाजनक माहौल बना है। मोदी प्रवासी भारतीयों के अलावा अमेरिकी उधमियों को भी लुभाने में सफल रहे।

**198 निंदनीय बयान** **08.11.2014**

कर्नाटक के गृहमंत्री केजे जार्ज ने बेंगलुरू के स्कूलों में बच्चों में बच्चियों से बदसलुकी व दुष्कर्म की बढ़ती घटनाओं को रोकने के उपाय खोजने के बजाय उल्टे मीडिया पर विवादित बयान दे दिया, जबकि मीडिया देश के सामने सच्चाई बयां कर अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा है। खुद की नाकामियों को छुपाने के लिए मीडिया पर आरोप मढ़ना सरासर निंदनीय है।

**199 बदलना होगा नजरिया** **15.11.2014**

जम्मू–कश्मीर में एक कांग्रेसी नेता ने चुनावी हलफनामें में बेटियों को देनदारियों की तरह दर्शाया। एएमयू के कुलपति लड़कियों के लाईब्रेरी मे न आने की पैरवी करते है। छत्तीसगढ़ में गरीब महिलाओं की नसबंदी में जानलेवा लापरवाही बरती गई। इस तरह का भेदभावपूर्ण रवैया बदलने के लिए सामाजिक दृष्टिकोण मे बदलाव की सख्त जरूरत है।

**200 साहस को सलाम** **03.12.2014**

हरियाणा मे लड़कियों के पहनावे पर फरमान जारी करने वाली खाप पंचायत को रोहतक की दो बहनों ने छेड़खानी करने वाले मनचलों की चलती बस में पिटाई कर करारा जवाब दिया। इन बहादुर बहनों को गणतंत्र दिवस पर सम्मानित करने का फैसला कर राज्य सरकार ने सभी लड़कियों को प्रोत्साहित करने का सही कदम उठाया है।

**201 बढ़ता आतंकवाद** **17.12.2014**

सिडनी में कैफे मे ग्राहको को बंधक बनाने की घटना हुई और फिर पेशावर मे भी दिल दहला देने वाला हादसा हो गया। दुनिया का कोई कोना आज आतंकवाद से सुरक्षित नहीं। इस्लामी चरमपंथी गुटों की बर्बरता बढ़ती जा रही है। दुनिया के सामने अनवरत गंभीर खतरा पैदा हो गया है। टेक्नोलॉजी के स्तर पर नए उपाय खोज इससे निपटा जा सकता है।

**202 विकास की दिशा में** **30.10.2015**

नए साल के पहले दिन मोदी सरकार द्वारा विकास की दिशा में योजना आयोग की जगह नीति आयोग गठन किया गया। संसाधनों के बंटवारे में राज्यों की बेहतर भागीदारी मुख्यमंत्रियों के लिए अच्छी शुरूआत साबित होगी। यदि नया आयोग बदलते आर्थिक मानदण्डो के अनुरूप जरूरतों की पूर्ति कर सका, तो ये परिवर्तन सार्थक सिद्ध होगा।

**203 क्रिकेट के हित में** **28.01.2015**

सुप्रीम कोर्ट ने क्रिकेट की शुचिता कायम रखने के उद्देश्य से दुरगामी महत्व का फैसला सुनाया। अब क्रिकेट प्रशासन का भविश्य बीसीसीआई को चलाने वाले धनी–मानी और प्रभावशाली लोगों के हाथों से निकलने की उम्मीद जगी है। सिर्फ बीसीसीआई ही नहीं, देश की अन्य खेल संस्थाओं को भी जवाबदेह और पारदर्शी बनाना जरूरी है।

**204 यही है सही आचरण** **18.02.2015**

'व्यक्ति–पूजा और हम' संपादकीय पढ़ा। अच्छा हुआ कि मोदीजी ने स्वंय अपने मंदिर के बारे में नराजगी जताकर उसे ध्वस्त करवाते हुए अंधश्रद्धा को यही रोक दिया। व्यक्ति–पूजा से ज्यादा उन्होंने कर्म–पूजा को महत्व दिया, जो उनके आचरण में दिखाई भी देता है। भारत का सही अर्थो में विकास प्रारंभ हो गया है।

**205 घोर गैर–जिम्मेदाराना** **21.02.2015**

कोस्टगार्ड के डीआईजी बीके लोशाली का बयान हैरतनाक होने के साथ–साथ आक्रोश जगाने वाला भी है। उनके बयान से सरकार के दावों पर सवाल उठे है। कार्रवाई को अंजाम देने वाले सुरक्षा बल के बड़े अधिकारी ही सरकार के रूख को काटने वाला बयान देने लगें तो विश्वसनीयता का संकट पैदा होगा ही। लोशाली पर कार्रवाई हो।

**206 नरमी छोड़े भाजपा** **11.03.2015**

अलगाववादी मसरत आलम की रिहाइ के बाद पीएम मोदी का बयान बेअसर रहा और जब मुफती कुछ और आंतकियों को रिहा करने की तैयारी में है। साफ है कि पीडीपी अपने रूख पर ताल ठोककर कायम है। उसके बयान व कृत्य राष्ट्र की राय से विपरीत है। भाजपा की नरमी से जम्मू–कश्मीर में राष्ट्रहित दांव पर लग रहा है।

**207 खाली पेट कैसा विकास** **25.03.2015**

'बहस ही रास्ता' संपादकीय पढ़ा। खाली पेट विकास की बात कैसे संभव है? किसानों के मन की बात समझकर ही अण्णा हजारे व विपक्षी दल उनके साथ खड़े हुए, जो सही भी है। अब सरकार ने बहस की ढाल अपना ली है। सरकार पहले ही चर्चा कर लेती है, जिससे टकराव टल जाता। सरकार सहमति की राह अख्तियार करे।

**208 हो निष्पक्ष जांच** **11.04.2015**

आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिलें में चंदन की लकड़ियों के 20 तस्कर पुलिस फायरिंग में मारे गए। केवल पत्थरों से हमले पर इतनी भीषण फायरिंग कैसे न्यायोचित है ? पुलिसवाले उन्हें मारने के बजाय गिरफ्तार कर विवेक का परिचय देते। मामले की निश्पक्ष जांच हो व दोशियों को सजा मिलें।

**209 उनकी अखण्ड विरासत** **18.04.2015**

'आंबेडकर पर रार' संपादकीय पढ़ा। छुआछूत के भुक्तभोगी की नजरों में जातिप्रथा का उन्मूलन हमेशा ही महत्वपूर्ण रहा। केवल वोटों की खातिर उनकी विरासत पर छिनाझपटी के बजाय आज उसे समृद्ध करने की जरूरत है। उनके समय, संदर्भ व समग्र योगदान के कारण ही उनकी विरासत अखंड व अनुपम है।

**210 घोर संवेदनहीनता** **29.04.2015**

अपनी गलती स्वीकार कर जनता का दिल जीतने वाले, इंसान का इंसान से हो भाईचारा का पैगाम देकर शपथ लेने वाले आप ऐसे संवेदनहीन तो नहीं थे कि आंखों के सामने मौत के फंदे पर लटकने वाले किसान भाई को नहीं बचा पाए। कही ंपद के मद में आप सबकुछ भूल तो नहीं गए? ऐसे तो आपके बुरे दिन जल्द शुरू हो जाएगे।

**211 पीड़ितों की व्यथा** **09.05.2015**

सलमान खान जेल में जब जाएगे, तब जाएंगे। लेकिन इन 13 वर्षो में गरीब पीड़ित परिवारों ने बिना अपराध के सजा भुगत ली। उस पर अभिजीत व फराह अली जैसे लोगों की टिप्पणीयों ने उनके जख्मों पर नमक छिडकने का काम किया। इस दुनिया में अमीर व गरीब दोनों को जीने का समान रूप से हक है। इसे हर इंसान को समझना चाहिए।

**212 अतीत भी गौरवमयी** **23.05.2015**

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पिछली सरकार की आलोचना करने तक तो ठीक था, लेकिन विदेशों में अपने देश की आलोचना की बात हजम नहीं हुई है। हम अतीत की उपलब्धियों को अनदेखी नहीं कर सकते । आज भारत परमाणु शक्ति, अंतरिक्ष अभियान, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में तरक्कियों के साथ वैश्विक समुदाय के साथ शान से खड़ा है।

**213 महिलाओं के हित में** **10.06.2015**

अब मातृत्व का दायित्व निभाने वाली औरतें भी अपने करियर में आगे बढ़ सकती है क्योंकि सिटी बैंक ने महिला–कर्मियों के लिए शिशु देखभाल भत्ते की शुरूआत तो कर दी है। अब महिलाओ को असमय नौकरी से विराम नहीं लेना पड़ेगा। इरादा नेक हो तो समाज को बराबरी की दिशा में ले जाना नामुकिन नहीं। यह पहल महिलाओं के हित में है।

**214 अनुभव बोला है** **20.06.2015**

आपातकाल के भुक्तभोगी रहे लालकृश्ण आडवाणी ने देश में मौजूद स्थितियों को देखते हुए इसके दोहराव की आशंका भर जताई है क्योंकि अब लोकतंत्र को कुचलने में सक्षम ताकतें अधिक मजबूत है। इसे भाजपा के अंदरूनी सियासी समीकरणों का नतीजा न मानकर अनुभवी का विश्लेशण मानना उचित होगा। इस पर गंभीरता से ध्यान दें।

**215 पहले ही सौंप देते** **11.07.2015**

‘सीबीआई के हवाले संपादकीय पढ़ा। जो काम पहले ही हो जाना चाहिए था, वह इतनी मौतों के बाद हुआ। अब सीबीआई को अपनी ‘पिजराबंद तोता’ की छवि से बाहर निकल इसे घोटाले से जुड़ें नेटवर्क की सारी परतें उघेड़नी होगी, ताकि सभी दोशी दंडित हो। सुप्रीम कोर्ट सीबीआई जांच की निगरानी करे, तभी दूध का दूध और पानी का पानी होगा।

**216 ठोस मुद्दों पर हो बहस** **27.07.2015**

मोदी का वाड्रा पर निशाना और फिर राहुल गांधी का पलटवार इन व्यक्तिगत कटाक्ष से सियासी तनाव अनावश्यक रूप से बढ़ेगा व देश के समक्ष मौजूद समस्याओं का हल और मुश्किल होगा। राजनीतिक प्रतिद्वंदी एक– दूसरें पर जुबानी तीर चलाने के बजाय ठोस मुद्दों और कार्यक्रमों को लेकर बहस कर अपने जिम्मेदार होने का परिचय दें।

**217 रोकें दु:खद हादसें** **08.08.2015**

हरदा के पास एक ही जगह पर एक साथ दो ट्रेनों का दुर्घटनाग्रस्त होना दु:खद है। रेलवे विभाग को अतिवृश्टि की जानकारी तो थी, फिर ध्यान क्यों नहीं दिया गया ? आधुनिक रेलगाड़ियों में खान–पान, आधुनिक संचार सुविधाएं देने की खूब चर्चा होती है, जो सराहनीय भी है। किन्तु पहले ऐसे हादसे रोकने के पुख्ता इंतजाम हों।

**218 निवेश की खातिर** **19.08.2015**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विदेशी निवेश आकर्शित करने के लिए लगातार विदेश यात्राएँ कर रहे है। उनकी यूएई यात्रा के दौरान भी यही देखा गया। आज भारत दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था है। यूएई में पहले ही भारतीय प्रतिभाओं ने अपने प्रमाण पेश किए है। उम्मीद है वहाँ के निवेशक भारतीय आशाओं को पूरा करेंगे।

**219 कड़वा यथार्थ** **29.08.2015**

शीना बोरा हत्याकांड से आधुनिक समृद्ध समाज का काला पक्ष सामने आया कि करीबी रिश्ते भी कितने स्वार्थपरक और खोखले हो गए है। यह आधुनिक समाज का अप्रिय यथार्थ है। जब रिश्तें धोखे की बुनियाद पर बनने लगते है तो समाज व परिवार में सुख शांति की कल्पना कैसे की जा सकती है? आत्मचिंतन जरूरी है।

**220 प्रगतिशील कदम** **10.10.2015**

महिला पायलटों को लड़ाकू विमान उड़ानें की मंजूरी देना भारतीय वायुसेना का एक प्रगतिशील कदम है। अमेरिका, इजरायल जैसे देशों में महिलाओं ने इस क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। जब महिलाएं दायित्व लेने के लिए तैयार है, तो उन्हें वंचित रखने की कोई तक नहीं है। यह लैंगिक समानता की दिशा में बड़ा कदम हैं।

**221 संवेदनहीन टिप्पणी** **24.10.2015**

केंद्रीय मंत्री वीकेसिंह ने दलित बच्चों की जलाकर मारने की घटना पर सवेदनहीन, गैरजिम्मेदाराना टिप्पणी कर जले पर नमक छिड़कने की कहावत चरितार्थ कर दी। यह सवेंदनहीनता की हद है। ऐसी असहज स्थिति से बचने के लिए मंत्रियों को नियंत्रित रखना जरूरी है। मरहम नहीं लगा सकते, तो उपहास तो न उड़ाएं।

**222 खत्म हो भेदभाव** **04.11.2015**

कंसल्टेंसी फर्म मैकिंजे ने महिलाओं से भेदभाव खत्म करने पर जीडीपी 46 लाख करोड़ रूपये बढ़ जाने का अनुमान लगाया, यानी घर में लक्ष्मी लाने के लिए घर की लक्ष्मी को बराबरी का दर्जा देने की समझाईश दी। देश को तेजी से प्रगतिपथ पर ले जाने के लिए महिलाओं के साथ भेदभाव खत्म करने की दिशा में प्रयास हो।

**223 उचित सलाह** **18.11.2015**

'प्रणव दा कि सलाह' संपादीकय पढ़ा। पुरस्कार लौटाने वाले लोग ठण्डे दिमाग से सोंचे कि क्या उन्होंने सही किया? वीके सिंह ने भी बिना सबूत के निराधार बयान देकर आग में घी डालने का काम किया। इस तरह की बातों से बचना चाहिए। पुरस्कार–सम्मान वापस लेकर माहौल को सुधारने में योगदान दें।

**224 सौहार्दपूर्ण हो संवाद** **28.11.2015**

संसद के शीतकालिन सत्र में सरकार ने 'सेकुलर' शब्द के गलत इस्तेमाल व विपक्ष ने 'असहिश्णुता' की बहस को उठाया, किंतु जब ऐसी बहस से तो कटुता बढ़े, यह लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं। बेलगाम बोलों की वजह से कटुता बढ़ी है। संविधान में निहित मूल्यों के प्रति दृढ़ रहकर ही देश विकास के रास्ते पर आगे बढ़ सकता है।

**225 कोर्ट की अवमानना** **12.12.2015**

सोनिया गांधी ने कहा कि वे इंदिरा की बहू हैं और किसी से नहीं डरतीं। इंदिरा की निडर बहू को यह नहीं मालूम कि कानून के प्रति सम्मान का भाव रखते हैं। उनकी सास भी अदालत का सम्मान करते हुए उसके समक्ष हाजिर हुई थीं। एक अदालती प्रकरण को राजनीतिक प्रतिशोध का नाम देना अदालत की अवमानना है।

**226 महिलाओं के हित में** **02.01.2016**

कामकाजी औरतों के लिए मातृत्व अवकाश की अवधि 12 हफ्ते से 26 हफ्ते करने और मां बनने के बाद दो साल तक घर से काम करने का विकल्प देना स्वागतयोग्य है। अब संस्थान प्रतिभाशाली महिलाओं का चयन कर श्रेष्ठतर मानव संसाधन से वंचित नहीं होंगे। इससे बच्चों की बेहतर परवरिश में भी मदद मिलेगी।

**227 उचित नाराजगी** **03.02.2016**

मनरेगा, खाद्य सुरक्षा आदि योजनाओं पर अमल में ढिलाई पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए सही सवाल उठाया कि कोई राज्य संसद में पारित कानून को लागू करने में कैसे ढ़ील बरत सकता है? ये स्वीकार्य नहीं कि केन्द्र कानून बनाएं, लेकिन राज्य उसे गंभीरता से न लें। कल्याणकारी योजनाओं में सियासत न हो।

**228 स्वच्छता की खातिर** **17.02.2016**

'स्वच्छता की चुनौती' संपादकीय पढ़ा। स्वच्छता की खातिर हमारे शहरों में लगी होड़ और केन्द्र सरकार द्वारा प्रोत्साहन के रूप में अच्छा प्रदर्शन करने वालों को अतिरिक्त राशि देने का फैसला सराहनीय है। यदि सभी लोग अपने शहर की सुरत संवारे तो बाद में अन्य सुधार भी होंगे ही।

**229 आरक्षण व सियासत** **24.02.2016**

हरियाणा न सिर्फ जाट आंदोलन के कारण अशांत है, बल्कि वहां जातीय टकराव की भी स्थिति बन रही है। विपक्षी दल दबंग समुदाओं की ओर से उठी आरक्षण की मांग के लिए जिम्मेदार है। वे ऐसी मांगों को हवा देते है और सत्ता में आने पर कीमत चुकाते है। अब सियासी अवसरवाद के नतीजे हरियाणा भुगत रहा है।

**230 दिखाएं परिपक्वता** **05.03.2016**

'सहयोग की अपील' संपादकीय पढ़ा। प्रधानमंत्री ने प्रभावी अंदाज में कांग्रेसी नेताओं के हर सवाल का उन्हीं के दिग्गजों के उद्धरणों के जरिए करारा जवाब दिया, जो सराहनीय है। अब बारी राहुल गांधी की है कि वे पार्टी से ज्यादा देश के विकास के बारे में सोच–समझकर काम करें और अपने बड़े–बुजुर्गो की बातों का मान रखें।

**231 मायूस है मध्यम वर्ग** **30.03.2016**

गुजरे दो सालो मे शिक्षा खर्च 13 फीसदी, स्वास्थ्य लागत 14 फीसदी, आवासीय लागत 10 फीसदी और बिजली खर्च 8 फीसदी बढ़ा है। उस पर सरकार ने फिक्स्ड डिपॉजिट व लघु बचतों पर ब्याज दरें। घटाकर मध्यम वर्ग को और मायूस किया है। सरकार को मध्यम वर्ग के असंतुष्ट होने से पहले सचेत हो जाना चाहिए।

**232 रूके काले कारनामें** **06.04.2016**

पनामा पेपर लीक्स ने विकिलीक्स को भी पीछे छोड़ दिया। इस खुलासे ने यह बता दिया है कि कॉर्पोरेट पूंजी से चलने वाले मीडिया में सच उजागर करने की सामर्थ्य चुकी नहीं है। ऐसी बुराईयों को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून बनाएं व ताकतवर/प्रभावशाली लोगों को कानून के कठघरे में लाएं।

**233 खोजे स्थायी समाधान** **04.05.2016**

गुजरात में गरीब सर्वणों को 10 फीसदी आरक्षण की घोशणा कर भाजपा सरकार ने अभी तो शांति का रास्ता निकाल लिया, किंतु इस उपाय के न तो कोर्ट में टिकने की गारंटी है और न इससे सामाजिक शांति कायम होगी। जाटों से पाटीदारों तक फैला ये असंतोष फौरी उपायों से नहीं मिटेगा। अन्य उपायों के बिना समाधान नहीं।

**234 सही फैसला** **21.05.2016**

अच्छा हुआ जो सुप्रीम कोर्ट ने मानहानि मामले में फौजदारी कानून में बदलाव से इनकार कर दिया। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर एक–दूसरे पर कीचड़ उछालने का चलन बढ़ता जा रहा है। हरदम सच्चे–झूठें स्कैंडल उछाले जाते रहेंगे, तो न स्वस्थ जनमत निर्मित हो पाएगा, न किसी की प्रतिष्ठा सुरक्षित रह पाएगी।

**235 संतुलन की चुनौती** **10.06.2016**

बड़े शहरों में डीजल गाड़ियों पर पांबदी के प्रस्ताव के विरूद्ध भारी उद्योग मंत्रालय ने एनजीटी में आवेदन दिया है। एक ओर देश का पर्यावरण बचाने का आदर्श तो दूसरी ओर कारोबार चलाने व रोजगार देने की जमीनी चुनौती है। तरक्की की कीमत पर्यावरण प्रदूषण के रूप में चुकानी पड़ रही है, जो घातक सिद्ध होगी।

**236 यह चमत्कार नहीं तो और क्या है !** **10.06.2016**

यह अपने आप में कोई छोटा–मोटा चमत्कार नहीं है। कहां तो पहले पूरी दुनिया के ठेकेदार बनने वाले अमेरिका ने धार्मिक स्वतंत्रता के हनन का आरोप लगाते हुए गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने यहां आने के लिए वीजा देने से मना कर दिया था और कहां अब वह प्रधानमंत्री के रूप में मोदी की बार–बार अगवानी कर अभिभूत है। दो साल में मोदी चार बार अमेरिका की यात्रा कर चुके है। इस बार तो उन्होने अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों को अपने चमत्कारी संबोधन से मंत्रमुग्ध कर दिया। हकीकत यह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत और अमेरिका के रिश्तों में और विश्वास पैदा करने के लिए राजनय के स्तर पर भी कोशिशें की और इसी का नतीजा है कि आज अमेरिका हमारे पक्ष में पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा मजबूती से खड़ा है। चीन ने भी 26/11 के हमलावरों पर रपट जारी की । यह मोदी के अमेरिकी दौरे का असर है।

**237 तब दुनिया हंसती थी, आज साथ चाहती है......** **25.06.2016**

एक वक्त था जब हमारें देश की अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी इसरों को सेटेलाईट भी बैलगाडी से ढ़ोने पड़ते थे। राकेट को भी तब साइकिल पर रखकर ले जाया जाता था। ये वो समय था जब हमारा देश गरीब था। और दुनिया हमारी कोशिशों को संदेह की नजर में देखते हुए हंसती थी। मगर हमारे वेज्ञानिकों की कड़ी मेहनत, गहन लगन और विज्ञान की गहरी समझ ही रही की अब पूरी दुनिया सस्ती सेटेलाइट लाचिंग के लिये देख रही है। देश की तरक्की के लिए हजारो हजार वैज्ञानिको ने रिसर्च लेब में अपना जीवन खपा दिया। और अब हम उस मुकाम पर है जहां एक साथ 20 उपग्रह अंतरिक्ष में भेजकर ऐसा कर सकने वाले दुनिया के तीसरे देश बन गयें। भले अमेरिकी कंपनी गूगल हो या दुनिया के अन्य देश , अब वह नासा से दस गुना कम खर्च में सेटेलाइट भेजने के लिए भारत की ओर देखते हैं ।हमारे वैज्ञानिक गहरे सम्मान के पात्र है ।

**238 सौर उर्जा से चमक उठेगा अपना देश** **05.07.2016**

विश्व बैंक द्वारा दी जाने वाली एक अरब डॉलर की मदद से भारत साफ–सुथरी सौर उर्जा पैदा करेगा। इस क्षेत्र में यह अब तक का सबसे बड़ा सहयोग होगा। स्वच्छ और असीमित सौर उर्जा का दोहन करना सचमुच हमारे देश के लिए किसी वरदान की तरह होगा। अब तक जिस उर्जा का आधिकारिक प्रयोग गुजरात करता था, उसके उपयोग को अब पूरे देश में प्राथमिकता मिलेगी। ये पहल काफी हद तक उर्जा सेक्टर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। अब पूरे देश का रिश्ता अक्षय उर्जा से जोड़ना ऐसा क्रांतिकारी कदम होगा, जिसकी भारत को सख्त जरूरत है। हमने देखा है कि जल विद्युत, ताप विद्युत परियोजनाओं में भारी धन भी खर्च होता है और लोगों को विस्थापन का दर्द भी झेलना पड़ता है। जन विरोध के कारण वर्षो तक लटकी परियोजनाओं की लागत कई गुना बढ़ती है और बोझ बन जाती है। ऐसे में सौर उर्जा विकास की नई संभावनाएं पैदा करेगी।

**239 बीमारी का घर न बन जाए सुस्त जीवनशैली** **01.07.2016**

मौजूदा पीढ़ी स्मार्टफोन व सोशल मीडिया के चक्कर में व्यायाम से दूर होती जा रही है। उस पर जंक फूड व अटरम सटरम खाने ने उनकी सेहत को बुरी तरह प्रभावित करना शुरू कर दिया है। अक्सर देखने में आता है कि स्कूली बच्चों में भी कई अपने उम्र के मान से कही ज्यादा मोटे होते है। ऐसे में हमारी अगली पीढ़ी कितनी कमजोर, निष्क्रीय व बीमारू होगी। ये सोचकर ही कपकपी होती है ऐसे में ये जानना अच्छा लगा कि केरल सरकार 'मोटापा टैक्स' लागू कर रही है। भले टैक्स के डर से ही यदि लोग स्वस्थ रहने का प्रयास करते है तो ये अच्छा है। पहले हमारे देश की जीवनशैली में कड़ी मेहनत शामिल थी। बच्चें मैदान गली महल्लों में दौड़ते–कूदते–फांदते, महिलाएं घर का सारा काम करती और पुरूष भी कठोर मेहनत करते । हम उस जीवनशैली में नहीं लौट सकते तो कम से कम खुद को स्वस्थ रखने जितना शारीरिक काम तो करना ही होगा।

**240 मिसाल है इरोम का आंदोलन** **01.08.2016**

मणिपुर की इरोम शर्मिला ने अपने ही देश में 'अफस्पा' कानून के विरूद्ध 16 साल लंबी खामोश लड़ाई लड़ी। आखिरकार वह अपने ही तंत्र से लड़ते–लड़ते थक गई और उन्होने दुनियाभर में शांतिपूर्ण विरोध का प्रतीक बन गई अपनी भूख हडताल को तोड़ने का फैसला कर लिया। अब वे राजनीति मे ंजाएगी। उन्होंने यह फैसला चाहे जिस मनोस्थिति में लिया गया हो किंतु यह तो तय हैं कि अहिंसा के पुजारी गांधी का देश ही उन जैसी खामोश क्रांति को जन्म दे सकता था। अफस्पा हटाने या न हटाने के बारे में सरकारें बेहतर निर्णय ले सकती है। लेकिन इरोम शर्मिला का आंदोलन मानवता के लिए मिसाल है और रहेगा।

**241 भारत के लिये बड़ा झटका।** **22.08.2016**

फ्रांस की कंपनी द्वारा मुंबई के दरगाह पर बनायी जा रही स्कोर्पियन श्रेणी की 6 पनडुब्बियों से जुडे 22000 पेज के आकड़ें लीक होने की बात यदि सही हो तो यह भारत की रक्षा तैयारियों के लियें बड़ा झटका व चिंता का विषय है। इन पनडुब्बियों को मई 2016 में आरम्भि परीक्षण में सफल हो जाने के बाद इस साल के अंत तक नौसेना में शामिल करने की तैयारी हो चुकी है। ये गोपनीय आकड़ें पनडुब्बी की लड़ाकू क्षमता और प्रदर्शन शक्ति का ब्यौरा देते है। अब भारत को जल्द से जल्द पता करवाना चाहिए कि क्या इसमें फ्रांस की गलती है। यदि हां तो राफेल लड़ाकू विमान का सौदा रद कर सबक देना चाहिए।

**242 कटुरता की लड़ाई में जीत गयी नारी भाक्ति।** **31.08.2016**

शनि शिंगणापरु और तेरेम्बकेश्वर मन्दिर के बाद जब हाईकोर्ट की ओर से मुबंई की 585 साल पुरानी हाजी अली दरगाह के भीतरी हिस्से में महिलाओं के प्रवेश की इजाजत दी गई। इससे धार्मिक कटुरता के विरूद्ध महिलाओं की तरफ से दी गई सार्थक चुनौती सफल हुई। आखिरकार महिलाओं की प्रतिनिधि तृप्ति देसाई ने प्रवेश भी कर लिया । जब धर्म के भीतर से उसकी कटुरता को चुनौती मिलती है तो उसमें बदलाव की संभावना ज्यादा रहती है। वरना बाहरी चुनौती से तो परिवर्तन के बजाय सांप्रदायिक प्रतिक्रिया का खतरा बना रहता है। जब मुस्लिम महिलाएं देश का नेतृत्व संभाल सकती हैं तो उन्हें मंदिर या दरगाह में प्रवेश क्यों ना मिले। इससे भारतीय समाज को उदार लोकतंत्र और सर्वधर्म सम्भाव का रूप मिलेगा। कटुरता और उदारता की इस लड़ाई में नारी कामयाब हुई। उसे पुरूषों के बराबर अधिकार नहीं अपितु उनके बराबर समान दर्जा चाहिए।

**243 मौन की बात करें केजरी।** **27.09.2016**

जिस तरह मोदी जी 'मन की बात' करते है उसी तरह अरविंद केजरीवाल को विपश्यना के प्रशिशठ और जीभके ऑपरेशन के बाद 'मौन की बात' करना चाहिए। इससे देश का भला होगा।

**244 महिला खिलाडियों पर हमें है नाज** **11.04.2018**
भारतीय महिला खिलाडी अपने हुनर व दमखम से देश का नाम रोशन करने में पुरूषों से पीछे नहीं है। हिंदुस्तानी क्रीडा जगत में नई प्रतिभाओं का उदय हो रहा है। यह अच्छी बात है कि महिला खिलाडी घरेलू खींचतान और लैंगिक असमानता की बाधाएं तोडते हुए वैश्विक खेल आयोजनों में अपने देश का परचम लहरा रही हैं। गौरतलब है कि ये तमाम उपलब्धिया तब हासिल की गई हैं, जब भारतीय खेल तमाम तरह की राजनीति का शिकार हैं। प्रतिकुल माहोल में भी महिला खिलाडियों की उपलब्धियां हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा कर रही हैं। राष्ट्रमंडल खेलों के टेबल टेनिस मुकाबले में सिंगापुर जैसी मजबूत टीम को हराना वैसा ही है, जैसे ओलंपिक में चीन को परास्त करना। महिला खिलाडियों की ये उपलब्धिया पुरूष खिलाडियो को भी प्रेरित करेगी।

**245 प्रदूषण पर अब तो चेते!** **04.05.2018**
विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकडो के अनुसार दुनिया के 20 सर्वाधिक प्रदूशित शहरों में भारत के 14 शहरों का शामिल होना निश्चित ही गंभीर चिंता का विशय है। ऐसे सूरतेहाल के साथ कोई आश्चर्य नहीं कि दुनिया में प्रदूशण के चलते सबसे ज्यादा मौतें हमारे देश में होती हैं। प्रदूषण को लेकर अब तो चेत जाए। इस स्थिति को बदलने के लिए गंभीर प्रयासों की दरकार हैं।

**246 अक्षम्य हैं ऐसे बोल** **19.01.2019**
नेताओं के बिगडे बोल से आज पूरा देश आहत है। अब चुनावी उत्तेजना का अर्थ अभद्र भाषा रह गया है। नेता जैसी भाषा का प्रयोग करते हैं, वह असंसदीय, हिंसक और सामाजिक रूप से अमान्य है। सपा नेता आजम खान ने जया प्रदा के लिए जो कहा, वह अक्षम्य है। शरीर व चरित्र पर हमला हो तो स्त्री सबसे ज्यादा अपमानित महसूस करती है। इसलिए ऐसे नेताओं पर प्रतिबंध लगना चाहिए।

**247 न्यु इंडिया से पाक हो गया पस्त** **02.03.2019**
विंग कमांडर अभिनंदन की पाकिस्तान से इतनी जल्द और वह भी बगैर शर्त रिहाई बेशक भारत सरकार की सफल कूटनीति व सैन्य ताकत दिखाने का नतीजा है। तभी आज पाकिस्तान दहशतगर्दी पर भी बात करने को तैयार है। न्यू इंडिया ने पाक को अच्छा सबक दिया।

**248 अब भरोसा जीतने में जुट जाएं** **01.06.2019**
चुनाव में प्रचंड बहुमत से जीतने के बाद पीएम मोदी ने कैबिनेट के ज्यादातर पुराने साथियों पर ही भरोसा जताया। जीत के बाद उन्होंने जनता से केमिस्ट्री की बात कही थी। मंत्रीमंडल गठन में भी केमिस्ट्री का ध्यान रखा गया है। जरूरी है अब वे सर्वजन का भरोसा जीतने में जुट जाएं।

**249 ये हाल तो होगा ही।** **04.07.2019**
महानगरों में नहीं अपितु देश के अधिकांश शहरों में बरसात के कारण हाल बुरे है। हमारे यहॉ शहरों की बसाहट योजना इतनी खराब है कि जरा सा पानी बरसा नहीं कि हाहाकार मच जाता हैं। पानी निकासी होती नहीं और व्यवस्थाए उसमें डूब जाती है। पानी बहाव के प्राकृतिक रास्तों पर अतिक्रमण हैं। पेड़ नष्ट कर दिये गये हैं। जमीन कांक्रीट से भरी है तो यह हाल तो होगा ही।

**250 मुस्लिम महिलाओं को मिला हक।** **01.08.2019**

32 साल पहल जब इन्दौर की शाहबानों ने सुप्रीम कोर्ट में मुस्लिम महिलाओं का हक लिया था। तो वोट बैंक के चक्कर में तत्कालीन सरकार द्वारा संसद के माध्यम से उसे छीन लिया गया था। लेकिन आज मौजूदा सरकार ने संसद के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं को वह हक ससम्मान लौटाया। मोदी सरकार और देश की संसद ने यह जिम्मा लेकर सदियों से चली आ रही एक सामाजिक कुरीति को हटाने का क्रान्तिकारी उपक्रम किया है। लेकिन अब भी धर्मके स्वंयभु ठेकेदारों और समाज की तार्किक सोच का द्वन्द्व है। धर्म के ठेकेदार आदतन यथास्थितिवादी होते हैं क्योंकि बदलाव से उनकी दुकानें खतरे में आ जाती है। केवल कानून बदलने से पूरा मकसद हासिल नहीं हो जाएगा। जरूरत सोच बदलने की भी है।

**251 भयावश नहीं, स्वेच्छा से त्यागें** **05.10.2019**

प्लास्टिक से हमारा सीवर तंत्र, हमारे जलाशय, नदियां व समुद्र और जानवर तक प्रभावित हो रहे। इसके लिए भी सरकार को सख्त कानून बनाना पड़े तो यह हमारे विवेक को चुनौती है। हमें तो खुद समझना चाहिए कि कौन–सी चीज हानिकारक है। ऐसी चीजों को स्वविवेक से त्यागें।

**252 पोर्न साइट्स कोरोना से कम नहीं** **11.10.2019**

कोरोना वायरस के मामले में चीन समय रहते चेत जाता तो इतने भयंकर परिणाम नहीं आते। किंतु भारत में तो कोरोना से भी खतरनाक पोर्न वायरस फैला हुआ है, जो युवाओं को बर्बाद कर रहा है। निर्भया, हैदराबाद सहित अधिकांश मामलों में पोर्न वीडियो देखने के बाद दुष्कर्म हुए। इसलिए इस वायरस को जितना जल्द हो, खत्म किया जाए।

**253 भारत से दुनिया ले रही सीख।** **03.11.2019**

दुनिया में जीवन की गुणवत्ता के मामले में छटवें भ्रष्टाचार शुन्यता में तीसरे और नई तकनीक ईजाद करने के मामले में शीर्श स्थान रखनें वाले स्वीडन के वैज्ञानिक महाराष्ट्र में स्थित रालेगण सिद्दि में जल संचयन सीख रहे हैं तो इतना साफ है कि विश्व स्तर पर भी भारत की ख्याति अब याचक की नहीं बल्कि दाता की बनने लगी है। इसके अलावा देश में आर्थिक सुस्ती की चर्चाओं और संकेतों के बावजूद सेंसेक्स का नई बुलंदियों की और बढ़ना भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

**254 इस तरह तो मूल्य–विहीन होता जाएगा समाज** **09.11.2019**

मुंबई, हैदराबाद में बच्चों को 24 घंटे पालने वाली कंपनियां तेजी से बढ़ रही हैं। कारण यह है कि बड़ी कंपनियां नाइट शिफ्ट में पुरूष और महिला कर्मियों के अनुपात को सम पर ला रही हैं। किंतु यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि नन्हे बच्चे अपने माता–पिता के ममत्व और वात्सल्य से दूर ही अपना बचपन बिता रहे हैं। मूल्य और नैतिकता बचपन में ही सिखाए जाते हैं। क्या इन व्यवसायिक क्रैश या नए शिशु केयर केंद्रों में आया यह सब सिखा सकती है? मां की गोद और स्कूल स्तर पर शिक्षण, बच्चे के व्यक्तित्व के सम्यक विकास में सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं। ऐसे तो लालन–पालन की हमारी शानदार व्यवस्था ही विलुप्त हो जाएगी। ऐसे मूल्य–विहिन समाज का निर्माण होगा, जिसका विद्रूप चेहरा बहुत भयानक होगा।

**255 बच्चों की मौंत का जिम्मेदार कौन।** **05.01.2020**

एक दिन में सर्वाधिक बच्चों के जन्म का रिकार्ड बनाने वाले हमारे देश के ही एक हिस्से कोटा राजस्थान के अस्पताल में 100 से ज्यादा बच्चों की मौत हो गई । हैरानी की बात यह है की अस्पताल में बच्चों को बचाने के लिए जरूरी बुनियादी संसाधन भी नहीं थे। जनसंख्या विस्फोट की थ्यौरी के बीच स्वास्थ्य का हक भी जरूरी है।

**256 रूढिवादी सोच से मुक्त हो समाज** **12.01.2020**

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे से पता चला कि राजस्थान के भीलवाड़ा में आधी से ज्यादा शादियां बाल विवाह हैं। इस क्षेत्र में मातृ मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत की लगभग दौगुनी है व शिशु स्वास्थ्य की भी यही स्थिति है। यह मुद्दा शासकीय अक्षमता से ज्यादा समाज में रूढिवादी सोच का है। समाज में महिलाओं की स्थिति सुधरे, इसके लिए सभी प्रयास करें।

**257 अन्य पीडितो का दर्द भी दूर हो।** **17.01.2020**

ऐसिड अटैक सर्वाइवर लक्ष्मी अग्रवाल को 'छपाक' और रेशमा कुरैशी को 'बीइंग रेशमा' के चलते सुर्खियॉ मिल रही है। यह अच्छा है। किन्तु भारत में कुल 1483 ऐसिड अटैक सर्वाइवर है। उनकी आंखों में भी बरसों से दर्द पसरा है। देश में अब उनके दर्द पर बात हो और उन्हें राहत मिलें और उनके दर्द को भी इलाज मिलें।

**258 प्रतिमा से जरूरी है अस्पताल** **24.01.2020**

महाराष्ट्र सरकार ने सरदार पटेल की मूर्ति से भी ऊंची डॉ. अंबेडकर की मूर्ति बनाने का ऐलान किया। इनके पास मूर्तियां बनाने के पैसे हैं, परंतु अस्पताल में गरीब व बेसहारा मरीजों के इलाज के लिए नहीं। क्या गरीब मूर्ति देखकर अपना रोग ठीक कर लेंगे? जबकि बाबासाहेब का पूरा जीवन इन्हीं गरीबों की स्थिति को बेहतर करने में बीता था।

**259 इससे महिलाओं का अहित ही होगा** **03.03.2020**

कहां तो हर जगह शराब दुकानें बंद होनी चाहिए और कहां प्रदेश सरकार महिलाओं के लिए अलग दुकाने खुलवा रही है! फिर तो अकेली रह रही युवतियां भी इससे अछूती नहीं रहेगी। इससे बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? भविश्य में सामाजिक व्यवस्था बिगड़ते देर नहीं लगेगी। फिर इस लत से छुटकारा पाने के लिए सेंटर का सहारा लेना पड़ेगा।

**260 स्वंय को बचाइए, तभी सब बचेंगे** **25.03.2020**

कोरोना से जंग के लिए समाज को व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक तौर पर एक अलग नजरिया रखना होगा। एक बचेगा तो सब बचेंगे और सब बचेंगे, तो ही एक भी बचेगा। अभी हम सब एक युद्ध में है। उच्च स्तर का आत्मअनुशासन इस युद्ध को जीतने में हमारी मदद कर सकता है, चूंकि विज्ञान के पास भी इसे हराने के लिए कोई दवाई नहीं है।

**261 महामारी के खिलाफ अच्छे प्रयास** **03.04.2020**

इस समय केवल यही सोच हो कि महामारी से देश को बचाने के लिए हम क्या कर सकते है। गुजरात सरकार स्टूडेंट स्टार्टअप इनोवेशन पॉलिसी 'इनोवेट व्हाइल यू आइसोलेट' लेकर आई और 4 दिन में ही इससे सरकार के पास प्रोडक्ट व सिस्टम के 88 नए विचार आए लोगों और स्वास्थ्य कर्मियों की मदद कर सकते हैं। वडोदरा में छात्रों ने 3 लेयर वाले दस्ताने तैयार किए। बेंगलुरू में हेक्साकॉप्टर ड्रोन के साथ वातावरण को कीटाणुरहित किया जा रहा है। हमें ऐसे ही इनोवेशंस की जरूरत है जो महामारी के खिलाफ मददगार हों।

**262 आन–बान–शान बढ़ाती महिलाएं** **08.03.2020**

पिछले दिनों सर्वोच्च अदालत ने सेना में महिलाओं को स्थायी कमीशन और कमांड पोस्ट देने के फैसले के साथ लैंगिक बराबरी को मजबूती दी। फिलहाल दुनिया के लगभग 22 देशों की प्रमुख महिलाएं हैं, तकरीबन 12% दुनिया पर महिलाओं का शासन है और यह प्रतिशत बढ़ता ही जाएगा। महिलाओं को पुरूषों से बेहतर होने की जरूरत नहीं। उन्हें लीडरशीप पोजिशन में आते हुए अलग, बेहतर विकल्प चुनने होंगे, जो वक्त के साथ प्रतिध्वनित होंगे व उनके संकल्प को अलग प्रतिमान देंगे। स्त्रियां नेतृत्व के पदों के लिए धीरे–धीरे रास्ता बना रही हैं।

**263 वक्त के साथ हम बनाएं संतुलन** **10.05.2020**

इतने लंबे लॉकडाउन के दौरान लगातार रसद, सब्जी, दूध ही नहीं दवाओं की आपूर्ति साधारण काम नहीं है। यदि हम ऐसे ही सकारात्मक भाव रखते हैं, तो संकट पार हो जाएगा। 45 दिनों में समझ आ गया कि जीवन के लिए तो बहुत कम जरूरत होती है, समस्या तो जीवन शैली की है। अब हमें ही यह संतुलन बनाना होगा। जीवन–शैली बदलनी होगी।

**264 कोरोना के भ्रष्टाचारियों को दंड दें** **18.04.2020**

खबरों से पता चला कि कई जगहों पर ग्राम प्रधान, मुखिया कम भोजन दे रहे और क्वारंटाइन में रहने वालों को दिन में घर जाने की इजाजत दे रहे हैं, ताकि उनके हिस्से का राशन बेच सकें। यानी सरकार की योजनाओं पर पानी फेरने की घृणित कोशिश। यहां भी भ्रष्टाचार शुरू हो गया। कोरोना से लड़ाई में बाधा बन रहे लोगों पर कड़ी कार्रवाई होना ही चाहिए।

**265 लॉकडाउन से हुआ सुखद बदलाव** **26.05.2020**

एक रिपोर्ट के मुताबिक लॉकडाउन के दौरान 1.87 करोड़ टन कार्बन उत्सर्जन प्रतिदिन कम हुआ, जो दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सर्वाधिक कमी है। 50% उत्सर्जन में कमी सिर्फ कारों, ट्रकों के ना चलने से आई है, जबकि हवाई यात्रा कम होने से 10% की कमी आई है। यदि दुनिया कुछ दशक तक बिना लॉकडाउन किए हर साल इतना उत्सर्जन कम कर लेती है तो धरती का तापमान एक डिग्री बढ़ने से रोका जा सकता है। आने वाली पीढ़ी सुकून से जिए, इसके लिए हमें इतना तो करना ही होगा।

**266 जीवन संग जीविका की भी फिक्र** **31.05.2020**

अब तक कोरोना के कारण लोगों का जीवन बचाने की ही बातें हो रही थीं, लेकिन अब जीविका के साथ जीवन बचाना हमारा कर्तव्य होगा। अब हमें जीविका के लिए घर के बाहर निकलना भी होगा और कदम सावधानी से रखना होगा। निर्भय होकर अनुशासन में रहना और बाहर जाकर काम करना भी एक बड़ी योग्यता मानी जाएगी।

**267 अवसाद से हमें स्वयं ही बचना होगा** **17.06.2020**

अभिनेता सुशांत सिंह द्वारा अवसाद के कारण आत्महत्या के बाद अब कोरोना के डर से भारतीय राजस्व सेवा के एक अधिकारी द्वारा आत्महत्या का मामला सामने आया है। भारत में 19 करोड़ लोग ऐसे अवसाद और एंक्जायटी रोग से जूझ रहे है। मानसिक स्वास्थ्य गंभीर विशय है, लेकिन सरकार मेंटल हेल्थ पर बजट का 2% से भी कम खर्च करती है। उपचार महंगा होने और उपहास उड़ाए जाने के डर से लोग इसका इलाज नहीं करवाते और जान दे देते हैं। इस स्थिति को बदलना होगा।

**268 ऑफलाइन शिक्षा सिखाती है जीवन** **27.06.2020**

**आलेख** 'एक पूरी पीढ़ी को शुश्क, कमजोर और असहाय न बना दे ऑनलाइन शिक्षा' पढ़ा। यह बिल्कुल सही है कि ऑफलाइन शिक्षा ही बच्चे के व्यक्तित्व को हर दृष्टि से विकसित करती है। मन, शरीर और चित्त को वैसा बनाती है, जो उसे जीवन पर्यंत संघर्ष में काम आता है। ऑनलाइन शिक्षा बच्चों को रूखा बना सकती है। इससे बचें।

**269 आखिर घर कैसे बन पाएगा विद्यालय** **30.06.2020**

**समाचार** पढ़ा कि 'हमारा घर–हमारा विद्यालय' के तहत अब बगैर शिक्षक के घर में लगेंगे सरकारी स्कूल। परिजनों को साथ बैठकर बच्चों को पढ़ाई करानी होगी। मगर यह व्यावहारिक रूप से कैसे और कितना संभव हो सकेगा, इसमें संदेह है। कई बच्चों के तो अभिभावक ही पढ़े–लिखे नहीं होते, फिर उनकी पढ़ाई का क्या होगा ?

**270 अग्रिम मोर्चे से दो–टूक पैगाम** **05.07.2020**

पीएम मोदी ने लेह में तैनात जवानों के बीच पहुंच जिस तरह सैनिकों के साथ देशवासियों का भी मनोबल बढ़ाया, उससे चीन का बौखलाना स्वाभाविक है। उसे वर्तमान भारत के साहस का अंदाजा नहीं था। पीएम मोदी के साथ रक्षा स्टाफ और आर्मी प्रमुख की मौजुदगी से चीन को यह संदेश भी गया कि यदि नहीं माने, तो युद्ध के लिए भी हम तैयार हैं।

**271 बदले माहौल में सराहनीय शिक्षण** **21.07.2020**

जिन बच्चों के पास मोबाइल नेट नहीं, ऑनलाइन पढ़ाई की सुविधा नहीं, अच्छी बात है कि शिक्षक उनके मुहल्ले में जाकर उन्हें पढ़ा रहे हैं। प्रदेश के कई गांव–कस्बों में यह देखा जा रहा है। इससे बच्चों का कोर्स भी अधूरा नहीं रहेगा वे स्कूल ना जाकर भी पढ़ाई कर रहे। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह बहुत सराहनीय कार्य है।

https://linktr.ee/sudhanahta

surbhitsudha@yahoo.com

सुधा नाहटा

प्रस्तुत पुस्तक 'सुरभित सुधा' में समय-समय पर नईदुनिया में लिखे गए लेखिका के 'पत्र संपादक के नाम' संकलित है। लेखिका के पत्र नई दुनिया में सन 1990 से प्रकाशित होते रहे है। जिनमें से कई पत्र नई दुनिया से पुरस्कृत हो चुके हैं। इसमें हमारी  महान संस्कृति व परंपरा को पृष्ट करने वाले पत्रो के साथ अपने चारों ओर के परिवेश को प्रतिबिंबित करने वाले यथार्थपरक पत्र भी है।